विश्व वाणी
समर्पण
Vol. 37 - Issue 4 | April 2024 | Rs. 10/-

प्रभु यीशु मसीह का सुसमाचार - प्रचार करने में क्या बाधाएं हैं? उस पर विजयी कैसे हों?

विश्ववाणी समर्पण
April 2024

उत्तर भारत कार्यालयः
एफ–11, प्रथम मंजिल, विश्वकर्मा कॉलोनी
एम.बी रोड, नई दिल्ली – 110044
फोनः 0129–4838657
ई–मेलः vvnorthindia@vishwavani.org

प्रकाशन कार्यालयः
1.10.28/247, आनंदपुरम, कुशाईगुड़ा
ई.सी.आई.एल पी.ओ., हैदराबाद – 500062
फोनः 040–27125557,
ई–मेलः samarpan@vishwavani.org

विश्ववाणी समर्पण पत्रिका हिन्दी, अंग्रेजी, तमिल, मलयालम, कन्नड़, तेलुगू, मराठी, गुजराती, उड़िया, बंगला, कोक बोरोक व सौरा भाषा में प्रकाशित होती है। वार्षिक शुल्क 100 रू. है।

विषय सूची

02 मनन के विषय
03 कार्यकारी निर्देशक...
07 मसीह की सुगन्ध बनें
10 विशेष आकर्षण
15 बाइबल अध्ययन
20 नेटवर्क चेयरमैन...
22 प्रेयर नेटवर्क निर्देशक...
25 कार्यक्षेत्र के समाचार

भाई एमिल जेबासिंह के

मनन के विषय

- जो लोग अड़चने देखकर ईधर उधर भागते हैं,
  वे कहते हैं कि बाहर शेर है (नीतिवचन 22:13)
  गलियों में तुफान है, आकाश में बादल छाया हुआ है (सभोपदेशक 11:4)
  परन्तु जो लोग साहस से चलते हैं,
  वे लोग कहते हैं कि मैं राजा के पास जाऊँगी,
  इसके लिए चाहे मुझे जो भी सजा मिले (एस्तेर 4:16)
- यदि आप अड़चनों को दूर करना चाहते हैं,
  तो इसके लिए आपको प्रार्थना के साथ संघर्ष करना आवश्यक है।
  जिससे आपके उन्नति के मार्ग में विरोध रूपी जो भी अड़चने आती है, वह आपसे दूर हो जायेगी।
- यदि बाधाएँ मनुष्य की ओर से आती हैं तो उसका सामना करो, यदि बाधाएँ परमेश्वर की ओर से आती हैं तो उस पर विचार करो!
- जबतक वह जो हमारे आगे आगे जाकर अड़चनों को दूर करता है, तबतक अड़चनों को हम देख नहीं सकते हैं, लेकिन यदि वह हमारे
  आगे आगे नहीं जाता है तो हमारे पाँव को घास भी कठोर लग सकता है।
- वे लोग जो लोग उद्देश्य के साथ जीते हैं,
  उनके पास अड़चनों को देखने का समय नहीं होता है,
  उनका उद्देश्य केवल दीवार के निर्माण कार्य को पूरा करना है (नहेम्याह 6:14,15)।
- युसूफ जहाँ भी गया, उसे अड़चनों का सामना करना पड़ा, लेकिन जैसे उसने इसे पार किया तो वह महल में पहुँच गया।
- सेना अड़चन को देखकर भयभीत हो गये, लेकिन दाऊद अपने विश्वास के कारण भयभीत नहीं हुआ।
- जो लोग अपने घुटनों में होकर लड़ना जानते हैं,
  वे अड़चनों को उन्नति का मार्ग बना देते हैं।
- प्रभु यीशु के बारे में प्रचार करना हमारा कर्तव्य है,
  और अड़चनों को दूर करना प्रभु यीशु का कर्तव्य है।
- यदि लोगों की ओर अड़चनें है, तो कार्यक्षेत्र प्रारम्भ नहीं किया जा सकता, यदि सहयोगियों की ओर से अड़चनें हैं, तो सेवा फलवन्त नहीं हो सकती है।
  यदि लहर रूपी अड़चनें हैं, तो आप किनारे नहीं पहुँच सकते हैं।
- वहाँ कोई भय नहीं होता जहाँ लोग यह कहते हैं कि प्रभु की स्तुति हो, जो विजय देता है, और वहाँ कोई विजय नहीं है, जो इसे नहीं जानते हैं।
- जो लोग स्वयं को संयमित कर एक सकरे मार्ग पर चलते हैं, उनके पैरों में खरोच भी नहीं आती है।

कार्यकारी निर्देशक की ओर से पत्र...

आपको उस प्रभु यीशु मसीह के सामर्थी नाम पर जो मर गया था और फिर से जीवित हो गया है और जो अनंत काल तक जीवित है की ओर से हमारा नमस्कार!

सर्वाधिक फलवंत वित्तीय वर्षः

प्रियों, पिछला वित्तीय वर्ष सेवा के लिए अत्यंत फलदायक रहा। हमने प्रभु के शक्तिशाली हाथ से कई बाधाओं पर नियंत्रण प्राप्त किया। हम परमेश्वर को धन्यवाद देते हैं जिसने अपनी कृपा/ अनुग्रह से हमें एक और वित्तीय वर्ष आरम्भ करने में सक्षम बनाया है। आपकी प्रार्थनाएँ, उदारतापूर्ण दान और सहयोग हमारी सेवकाई में लाभकारी रहे हैं।

इस नये वित्तीय वर्ष में हम 1400 नई सुसमाचार प्रचारकों के माध्यम से 7000 नये सुसमाचार प्रचारकों के माध्यम से 7000 नये गाँवों तक पहुँचने जा रहे हैं। हम 150 नये आराधना भवन बनाने जा रहे हैं। इसके लिए हमें 110 करोड़ रूपये की आश्यकता है। हम कार्यक्षेत्रों में बहुत अधिक फल उत्पन्न करने की योजना बना रहे हैं। हमें खुशी है कि आप भी हमारे साथ इस यात्रा का हिस्सा हैं। हम इस दृढ़ विश्वास के साथ आगे बढ़ रहे हैं कि परमेश्वर का सामर्थशाली हाथ बाधाओं को दूर करेगा और हमें लक्ष्य तक पहुँचने में सहायता करेगा। हाल्लेलुय्याह!

आप एक प्रार्थना सहयोगी, अपने क्षेत्र के एक स्वैच्छिक प्रतिनिधि हो सकते हैं, विश्ववाणी बचत बॉक्स के माध्यम से हर दिन सेवा के लिए न्यूनतम 10 रूपये का दान प्रतिमाह कर सकते हैं, एक आराधना भवन का निर्माण कर सकते हैं और सुसमाचार क्षेत्र में विकास कार्यों के लिए विशेष दान दे सकते हैं। साथ ही यदि आप दूसरों को इस सेवकाई का परिचय देंगे तो अवश्य ही हम कई बाधाओं को पार कर लक्ष्य तक पहुँच सकते हैं। आइए, हम परमेश्वर के राज्य का निर्माण करें।

सुसमाचार के प्रचार में बाधाएँः

इतिहास से पता चलता है कि प्रभु यीशु मसीह के गौरवशाली सुसमाचार का प्रचार पहली सदी से 21वीं सदी तक किया गया और इसमें कई मुसीबतों का सामना करना पड़ा। यही कारण है कि कलीसियाओं की संख्या में वृद्धि हुई है। धार्मिक संस्थाओं और परमेश्वर के भक्तों ने जागृति के लिए कड़ी मेहनत की है। आज भी सुसमाचार का प्रचार करने में उनका उत्साह कम नहीं हुआ है। हमें यह स्वीकार करना होगा कि सुसमाचार का प्रचार करने में बाधाएँ हैं। उन बाधाओं के कुछ निम्नलिखित कारण हैंः

सामाजिक कारणः

1. गलत धारणा के साथ यह आरोप भी है कि मसीही अनुभव, आराधना और सुसमाचार ही धर्मांतरण है।

2. सुसमाचार सेवकों और विश्वासीयों को उनके मसीही विश्वास के लिए प्रताड़ित किया जाता है और यीशु मसीह का इन्कार करने के लिए मजबूर किया जाता है। उन्हें

बुनियादी जरूरतों से दूर कर दिया जाता है। इन दबावपूर्ण बाधाओं के कारण सुसमाचार की उद्घोषणा थोड़ी धीमी पड़ गई है।

3. उच्च पदों पर मसीही अगुवों की कमी ओर उनकी भागीदारी।

कलीसियाएं:

1. व्यक्तिगत सुसमाचार प्रचार के महत्व के संबंध में कलीसिया में पर्याप्त शिक्षा का अभाव। सुसमाचार कार्य में अनुत्पादकता।

2. जिन कलीसियाओं को सुसमाचार की घोषणा के लिए बोझ के साथ प्रार्थना करनी चाहिए वे अपने व्यक्तिगत उद्देश्यों को ही महत्व दे रहे हैं।

3. कलीसियाओं द्वारा उन लोगों के बीच सेवा करना जिन्होंने कई बार सुसमाचार सुना है और उन लोगों के साथ सुसमाचार प्रचार करने में रूचि न रखना जिन्होंने एक बार भी नहीं सुना है।

4. सुसमाचार की घोषणा में प्रतिबद्धता की कमी क्योंकि उन्हें लगता है कि इससे उन्हें कोई लाभ नहीं या उनमें बलिदान की कमी है।

5. सुसमाचार कार्य में भाग लेने में रूचि की कमी और उनके द्वारा बेकार बहाने देना और कार्य को स्थगित करना भी एक कारण है।

सुसमाचार प्रचारक और विश्वासी:

1. आपसी मतभेद के कारण व्यक्तिगत झगड़े

2. सेवा और वेतन के बीच परेशान।

3. गुणवत्ता या संख्या के आधार पर सुसमाचार कार्य का मूल्यांकन करने के लिए तनाव और बाहरी दबाव।

4. चुनाव में प्रतिबद्धता की कमी की परमेश्वर को प्रसन्न करना है या दी गई सेवकाई में अधिकार रखने वाले व्यक्ति को।

5. उद्धार के अनुभव में वृद्धि किए बिना नाममात्र मसीही के रूप में जीवन व्यतीत करना, उनका फलरहित जीवन सुसमाचार की घोषणा में बाधा है।

उपरोक्त ऐसे कारणों से, सुसमाचार उद्घोषणा पूरी तरह से बंद हो गई है।

बाधाओं पर विजय पाने के उपाय:

विश्वास के नायक जिन्होंने अपने जीवन में समस्याओं पर विजय प्राप्त की है, उन्हें उत्पत्ति की पुस्तक से आरम्भ करके पवित्र बाइबल के प्रत्येक अध्याय में देखा जा सकता है। अतः वे हमारे लिए उदाहरण हैं। मूसा और यहोशू के नेतृत्व ने इस्राएलियों को कई बाधाओं को पार करने और कनान की प्रतिज्ञा की गई भूमि में प्रवेश करने में सक्षम बनाया। यहोशू के पहले अध्याय में कुछ ऐसे तरीके हैं जिनसे नये अगुवा यहोशू के नेतृत्व में इस्राएलियों को भारी विजय मिली।

1. अपनी दिशा में स्पष्ट रहें : (पद 2–5)

अब तू उठ और जा, कनान देश तुम्हारे लिये देने की प्रतिज्ञा की गयी है। इसकी सीमाएं तेरी भाग हैं। मैं तेरे संग रहूंगा, मैं तुझे कभी न धोखा दूंगा और न तुझ को छोडूंगा, पद 6,7 एवं 9 में प्रतिज्ञा की और 18 में परमेश्वर कहता है "तू दृढ़ और हियाव बांध रह"।

हम विश्ववाणी सेवकाई में एक स्पष्ट दिशा की ओर आगे बढ़ रहे हैं। हम उन गाँवों की ओर जा रहे हैं जिन्होंने यीशु मसीह को एक बार भी नहीं सुना है! प्रभु हमारा अगुवा हैं और वह हमारा नेतृत्व कर रहा है। उसका अनुसरण करना और उसके लिए सेवा करना एक बड़ा सौभाग्य है!

2. अपनी मंजिल के प्रति आश्वस्त रहें:

विश्ववाणी सेवकाई का दर्शन 2030 तक एक लाख गाँवों में सुसमाचार प्रचार करना है! यहोशू के माध्यम से परमेश्वर का महान उद्देश्य पूरा हुआ। इसी प्रकार हम आपके भी माध्यम से परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करने की उम्मीद कर रहे हैं। परमेश्वर के लिए कुछ भी कठिन नहीं है! हम इस महत्वाकांक्षी के साथ आगे बढ़ते रहे हैं कि हम अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लें।

3. परमेश्वर की इच्छा का पालन करने के प्रति सचेत रहें:

हम इन पद में स्पष्ट रूप से पढ़ सकते हैं कि परमेश्वर की इच्छा का पालन करना परमेश्वर के जीवित वचन को सावधानी पूर्वक पढ़ना, उससे प्रेम करना और विश्वास के साथ उनका पालन करना है। तभी प्रभु हमारी अभिलाषाओं को पूर्ण करेगा। सुसमाचार क्षेत्रों में बहुतायत की फसल होगी। हम जहाँ भी जाएंगे, परमेश्वर की उपस्थिति हमारे आगे–आगे बनी रहेगी। वह सब कुछ करना जो परमेश्वर करता है, जीवन और सेवा में आशीषों को लेकर आती है।

4. अपने निर्णय के प्रति प्रतिबद्ध रहें:

हमारे परमेश्वर ने हमें यहाँ तक पहुँचाया है और अनुग्रह पूर्वक हमें सुसमाचार क्षेत्र में बड़े भाग दिए हैं। क्या हमें अपना हिस्सा नहीं भेजना चाहिए ताकि जिनके पास कुछ नहीं है वे लोग भी आन्नद उठा सकें? क्या यह हमारी जिम्मेदारी नहीं है कि हम आत्माओं की कटनी को बढ़ाने के लिए अपनी भागीदारी बढ़ाएँ? रानी एस्तेर अपनी प्रजा के लिए राजा के पास यह कहकर गई कि "यदि नष्ट हो गई, तो हो गई"। हमारा भी वही प्रतिबद्धता होनी चाहिए और हमें इसके साथ आगे आना चाहिए। परमेश्वर की रक्षा का हाथ हमारे साथ है। जैसे प्रभु ने आपको विश्राम दिया है, वैसे ही आप भी दूसरे "आत्माओं को विश्राम" देने के लिए अपने मदद के हाथ को बढ़ाएँ।

5. अपने दृढ़ संकल्प के साथ सहयोगी बनें:

किसी कार्य को पूरा करने के लिए पूर्ण सहयोग देना आवश्यक है। भले ही हमारे पास अधिकार और वित्तीय सहायता है, जन सहयोग का समर्थन है। जब परमेश्वर की महान सामर्थ्य इसमें शामिल हो जाती है, तो उसके सहयोग से हम महान कार्य कर सकते हैं

और जब बड़े–बड़े पहाड़ हमारे सामने हों, तब भी हम उन पर आसानी से विजय प्राप्त कर सकते हैं। आमीन!

प्रार्थना करें और सेवकाई में भाग लें:

· 45 नए एज्राओं के लिए प्रार्थना करें जो गुजरात और आन्ध्र प्रदेश के प्रशिक्षण केंन्द्रों में पूर्णकालिक सेवा के लिए प्रशिक्षण ले रहे हैं

· प्रार्थना करें कि अप्रैल महीने में 225 नए सेवा गाँवों को गोद लेने के लिए 225 परिवार आगे आएं और 4000 रूपये प्रतिमाह योगदान दें ताकि फसल बढ़ सकें।

· आगामी चुनावों के लिए प्रार्थना करें। हमें प्रार्थना करनी चाहिए कि परमेश्वर जिस उचित व्यक्ति को चाहे उसे स्थापित करे और हमारा राष्ट्र सभी क्षेत्रों में आगे बढ़े।

· प्रार्थना करें कि सभी कलीसियाओं के अगुवों और पासवानों में उत्साह, दूरदर्शिता और सामर्थ के साथ काम करने की इच्छा जागृत हो ताकि नए कलीसिया बन कर आगे आएं।

· उन सुसमाचार सेवकों और उनके परिवारों की सुरक्षा के लिए प्रार्थना करें जो सुसमाचार क्षेत्रों में विरोधों के बीच काम कर रहे हैं। कृप्या उन सेवकों के परिवारों के भविष्य के लिए प्रार्थना करें जो सेवा कार्य करते हुए गेहूँ के गिरते हुए दानों की पंक्ति में शामिल हो गए हैं। कृप्या उनके लिए अपना बहुमूल्य सहयोग दें। प्रभु स्वर्ग के द्वार को आपके लिए खोलेंगे और आपको अपनी अपरम्पार आशीष देंगे।

"और जो उसके पास आते थे, उन सब से वह मिलता रहा और बिना रोक–टोक बहुत निडर होकर परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता और प्रभु यीशु मसीह की बातें सिखाता रहा" प्रेरितों के काम 28:31।

12.03.2024 मसीह में आपका भाई

चैन्नई *रेव्ह.डॉ.डब्ल्यू विल्सन ग्नानाकुमार*

बाइबल मेरा प्रकाश है

मेरा नाम धीमी गति से सीखने वालों की सूची में था और इसलिए कई लोगों ने मेरा मजाक उड़ाया करते थे। तीन साल पहले, जब मैं अपनी दसवीं की परीक्षा में बैठा, तो मैंने प्रभु में एक निर्णय लिया। वह था "मैं बाइबल खोले बिना अपनी स्कूल की किताब नहीं खोलूंगा"। मैंने दिन के आरम्भ के समय में यीशु के चरणों में कम से कम से एक घंटा बिताने का भी निर्णय किया। परमेश्वर उन लोगों पर दयालु है जिनके पास ज्ञान की कमी है और उसने मुझे अपने गवाह के रूप में परिवर्तित कर दिया। जी हाँ, उसने उन लोगों और शिक्षकों के सामने मेरे जीवन में आश्चर्यकर्म किया जो मेरा मजाक उड़ाते थे। बाइबल की रोशनी ने मुझे न केवल 10वीं में बल्कि 11वीं और 12वीं में भी प्रथम स्थान प्राप्त करने में सक्षम बनाया। हम उन सुसमाचार सेवकों को धन्यवाद देते हैं जिन्होंने हमसे सम्पर्क किया और हमें वचन के प्रकाश में लाया। हम प्रभु की स्तुति करते हैं। *– दिव्या बेन, हिंदला, गुजरात।*

मसीह की सुगन्ध बनें!

प्रभु में प्रियों

मसीह यीशु के प्रेमी नाम में सादर नमस्कार!

"**सम्पूर्ण हृदय से प्रभु का कार्य, यह सुखदायक सुगन्ध है**" पवित्रशास्त्र में परमेश्वर के लोगों को विभिन्न नामों से पुकारा गया है जैसे कि जगत की ज्योति जिसका कार्य अन्धकारमय जगत में प्रभु का प्रकाश पहुँचाना, आगे पृथ्वी का नमक अर्थात् मसीही स्वाद आत्मिक जीवन द्वारा दूसरों तक बाँटना। फिर आगे मसीही की पत्री वह पत्री जिसे लोग पढ़ते हैं कि हमारे हृदय रूपी आत्मिक पट्टियों पर क्या क्या लिखा गया है यह सब नाम मात्र शब्दों में ही नहीं बल्कि पवित्रआत्मा की सहायता से हकीकत में तबदील होते रहना है। एक व्यक्ति जब विश्वास में आता है तो उसकी आत्मिक यात्रा शुरू होती है, जिसमें वह पवित्र आत्मा की सहायता से बनता रहता है, अर्थात् उसका पवित्र पात्र, जगत की ज्योति, पृथ्वी का नमक, मसीह की पत्री इत्यादि।

किन्तु इस अंक में प्रभु के उन कार्यों पर विचार करेंगे जो हमारे द्वारा समाज में मसीह की सुगन्ध फैलाती है। सुगन्ध व दुर्गन्ध एक दूसरे के विपरीत शब्द हैं, सुगन्ध आकर्षित करती है, किन्तु दुर्गन्ध दूर भगाती है, जब आप किसी से मुँह मोड़ लेते हो या कोई आपसे मुँह मोड़ लेता है, या आपसे मिलना नहीं चाहता तो समझ लीजिये कुछ न कुछ मन की दुर्गन्ध है, किन्तु एक बात पर ध्यान दीजिये, मसीह ने हमें दुर्गन्ध नहीं बल्कि सुगन्ध देने के लिये बुलाया है। यह सुगन्ध व महक, कपड़ों पर डाली जाने वाली व शारीरिक नहीं है, यह वह नहीं है जिसे हमने सुबह उपयोग किया किन्तु शाम तक गायब हो गयी, यह सुगन्ध दुर्गन्ध को दबाने के लिये नहीं किन्तु मिटाने के लिये है। सुगन्ध का कार्य है फैलना है, पौलुस प्रेरित थिस्सलुनीकियों की मंडली को लिखता है" ...तुम्हारे विश्वास की जो परमेश्वर पर है हर जगह चर्चा फैल गयी है... (1:18) पद तीन के अनुसार उनके विश्वास के कार्यों की प्रेम पूर्ण परिश्रम की आशा की धीरता की चर्चा हर जगह जब होने लगी, तो पौलुस उनके लिये धन्यवाद व प्रार्थना करने लगा क्योंकि हर गली–गली में, घर–घर में गाँव –गाँव में उनकी साक्षी फैलने लगी। आपने ध्यान दिया होगा, कुछ फूल सुबह–2 सुगन्ध फैलाते हैं तथा शाम को मुर्झा जाते हैं, वैसे ही कुछ फुल शाम को बड़ी ताजी–2 सुगन्ध देते है, किन्तु सुबह नहीं देते, हाँ प्रियों जब वे फूल ऐसी सुगन्ध फैलाकर मनों को मोह लेती है

तो कल्पना कीजिये प्रभु अपने विश्वासियों से कितनी उम्मीद करता होगा। क्या आप दूसरों के लिये सुगन्ध बने हैं? क्या वह जीवनदायक यीशु के पवित्र नाम की सुगन्ध आपके जीवन से, आपके घर से व आपकी कलीसिया से बह रही है? याद रहे अब हम अपने नहीं है, दाम देकर खरीदे गये हैं, इसलिये सम्पूर्ण हृदय से उसका वह कार्य करें, जिसके लिये उसने हमें जगत की उत्पति से पहले चुना।

• मसीह के प्रेम में चलने से सुखदायक सुगन्ध

प्रेम में चलो जैसा मसीह ने भी हमसे प्रेम किया और हमारे लिये अपने आप को सुखदायक सुगन्ध के लिये ....बलिदान कर दिया। (इफिसियों 5:2)

हमारे लिये सबसे उत्तम आदर्श स्वयं हमारे प्रभु यीशु है। उसका प्रेम बलिदानपूर्ण प्रेम है, ध्यान दीजिये उसी प्रेम में सुखदायक सुगन्ध भी है। पवित्रशास्त्र में लिखा है प्रेम धीरजवन्त है, कृपालु है, डाह नहीं करता, अपनी बड़ाई नहीं करता, वह फूलता नहीं, अनरीति नहीं चलता इसी तरह हम 1कुरिन्थियों 13:4–7 पद तक पढ़ते रहें, तो हमारे प्रभु का अगापे प्रेम अथाह सागर से भी गहरा है। जब अपने को मारते व कूटते हुये वश में लाते हैं तो तभी प्रेम में चल पायेगें, इससे मसीह की खुशबू फैलेगी, हम उस सकरे मार्ग पर चलते चलते स्थिर रह सकते है।

आज वह जागृति क्यों नहीं आ पा रही है? कलीसियाएं निरंकुश क्यों हो रही है? सामर्थ क्यों नहीं बह रही है? यह विचारने व प्रार्थना के विषय हैं। मसीह का प्रेम बलिदान का प्रेम है। हमारे प्रभु यीशु के प्रेम को विचारिये वह हमारे लिये शून्य बन गया.. क्रूस की मृत्यु भी सह ली, इस कारण परमेश्वर ने उसको अति महान भी किया, और वह नाम दिया जो सब नामें में श्रेष्ठ है (फिलि.2:7–9)। आइये मसीह यीशु को पकड़कर उनके प्रेम में चलें और वह सुखदायक सुगन्ध फैलायें।

• जय के उत्सव में ज्ञान की सुगन्ध

हो सकता है आप संसार में कामायाबी के शिखर पर हों, किन्तु आत्मिक जीवन में कहाँ पर हैं? हम जब यीशु मसीही को प्रभु मानते हैं तो वह हमको जय के उत्सव में लेकर चलता है, एक विश्वासी के जीवन में प्रतिदिन उत्सव है उसे 25 दिसम्बर का इन्तजार नहीं करना पड़ता। यह तैयारी भौतिक नहीं किन्तु आत्मिक है, जब हम आत्मिक तैयारी के साथ दिनचर्या शुरू करते हैं तो वह दिन आपके लिये विजय का दिन होता है, आप दूसरे को प्रेम करने व क्षमा करने में विलम्ब नहीं करते हैं। "बुराई को भलाई से जीत लो (रोमियों 12:21) यही हमारी प्रभु की शिक्षा है तथा यही विजयी होने का रहस्य भी है।

प्रियों हमें ध्यान देना होगा यह सदा उत्सव का उत्सव हैं। यह जय का उत्सव है। जब हम उस दुर्गन्ध भरे जीवन व मन से छुटकारा पाते हैं तो वहीं से

वह उत्सव प्रारम्भ हो जाता है तथा मसीह के ज्ञान की सुगन्ध बन जाते हैं। यह कितना बड़ा आदर दिया गया है। वह ज्ञान जो सदियों से गुप्त रखा गया था। अब हमारे को मसीह में प्राप्त हुआ है, यह शब्दों का नहीं व्यवहारिकता में है, यह पत्थर की पटिया पर नहीं किन्तु हृदय रूपी पटिया पर लिखा गया है आइये हम इस ज्ञान को फैलायें। क्यों न विजयी होने के द्वारा इस सुखदायक सुगन्ध को फैलायें।

• देने के द्वारा सुखदायक सुगन्ध

जिस परमेश्वर ने अपने पुत्र को ही हमारे लिये दे दिया, हम उसे क्या दे सकते हैं? किन्तु देने की पहल स्वयं परमेश्वर पिता ने की, फिर पुत्र ने अपने आप को क्रूस पर बलिदान होने को दे दिया, वह प्रसन्न होता है जब हम भी विश्वास से देने की पहल करते है। पौलुस स्वयं के अनुभव में लिखते है" जो वस्तुएं तुमने इपफ्रुदीतुस के हाथ से भेजी थी, उन्हें पाकर मैं तृप्त हो गया हूँ वह तो सुखदायक सुगन्ध ग्रहण करने योग्य बलिदान है, जो परमेश्वर को भाता है (फिलि. 4:18)। आइये सेवा में व सेवकों को देने के द्वारा वचन की इस आशीष को प्राप्त करें। एक दिन एक कलीसिया के बड़े भाई को कहते हुए सुना " जब हम देते हैं तो लभाविन्त होते हैं, उनकी कलीसिया को प्रभु ने बहुत बढ़ाया है।

प्रियों उसके प्रेम में चलते हुये– सुखदायक सुगन्ध फैलायें,
जयवन्त होते हुये उसकी सुखदायक सुगन्ध फैलायें,
देने के द्वारा मसीह की सुखदायक सुगन्ध फैलायें।
इन वचनों के द्वारा परमेश्वर आपको आशीष दे आमीन्।

नई दिल्ली
20.03.2024

प्रभु में आपका भाई
आनन्द सिंह

ऑनलाइन दान भेजें

A/C Name: VISHWA VANI SAMARPAN
Bank: STATE BANK OF INDIA
A/C No.: **1040 845 3024**
IFSC Code: **SBIN0003870**
Branch: ANNANAGAR WEST, CHENNAI

We request you to share your transaction reference to acknowledge with receipt

✆ 044-26869200

अप्रैल 2009 समर्पण के लिए भाई एमिल जेबासिंह द्वारा लिखा गया विशेष आकर्षण:

प्रभु यीशु मसीह का सुसमाचार - प्रचार करने में क्या बाधाएं हैं? उस पर विजयी कैसे हों?

प्रियों
अड़चन क्या है?
प्रत्येक जो आगे बढ़ने में, हमारे सामने आती है, मार्ग में बाधाएँ पहुँचाती है, इसे ही अड़चन कहते हैं।
इस विशेष आकर्षण में,
हम यीशु मसीह के सुसमाचार में आने वाली अड़चनों के बारे में जानेंगे, सुसमाचारीय सेवा, और कलीसिया की बढ़ोतरी के मार्ग में बहुत सी अड़चनों को शामिल कर सकते हैं।
लेकिन इस विशेष आकर्षण में, हमें प्राथमिक अड़चन का जानने के लिए आइए इसे महायाजक के साथ शुरूवात करें:

मत्ती 26:62–66 पदों पर गंभीरता से विचार करें:

महायाजक : "क्या तू कोई उत्तर नहीं देता ?"
ये लोग तेरे विरोध में क्या गवाही देते हैं? (पद 62)

यीशु : 'यीशु चुप रहा' (पद 63)

महायाजक : "मैं तुझे जीवते परमेश्वर की शपथ देता हूँ
कि यदि तू परमेश्वर का पुत्र मसीह है, तो हमसे कह दे"
वह जो अब तक चुप था, उसने बोला,
मैं बहिरे की नाई सुनता नहीं, और मैं गुंगे के समान मुँह नहीं खोलता" (भजन 38:13)

यीशु : हाँ, यह मैं तुझे कहता हूँ (पद 64)
यदि कोई अपने आपको मसीह, अभिषिक्त कहता है,
तो वह परमेश्वरों के परमेश्वर का विरोध करता है,

यीशु : हाँ, यह मैं तूझे कहता हूँ,
यदि कोई अपने आपको मसीह, अभिषिक्त कहता है,
वह परमेश्वरों के परमेश्वर का विरोध व निंदा करता है,
और उसे पत्थरवाह करके मार दिया जायेगा। (लैव्यव्यवस्था 24:16)
वह इतने पर भी नहीं रूका।

उसने एक साधारण स्त्री से कहा कि "उद्धार यहूदियों में से है" (यूहन्ना 4:22)
वह इसे यहूदी जाति के प्रमुख के सामने भी रहस्य को खोला।
वह स्वयं को मसीह के रूप में उन यहूदियों पर प्रकट किया, जो

व्यवस्था को मानते है और बंद बाँक्स में सांप की तरह ही यहूदी लोग फूंकार मारते हैं।

अपने सम्पूर्ण हृदय व शक्ति, प्राण व विश्वास के साथ कहता है
कि " निश्चित चीजों पर हम विश्वास करते हैं (लूका 1:1)
उसने महायाजक के सामने वैसा ही किया,
उसने सत्य के सुसमाचार का प्रचार किया,
65 पद पर ध्यान दें : यीशु ने क्या कहा?
पहला : मैं मनुष्य का पुत्र हूँ, अर्थात् मनुष्य के रूप में जन्म लिया।
दूसरा : मैं परमेश्वर का पुत्र हूँ, सत्य व पवित्र परमेश्वर हूँ।
तीसरा : आप व्यवस्था की ओर से महायाजक हैं, लेकिन मैं सर्वशक्तिमान के दाहिनी ओर से हूँ।
संभव है कि आज आप हैं, लेकिन कल नहीं रहेगा।
लेकिन एक दिन मुझे आकाश के बादलों में आते देखोगे।
आज तुम मेरी जांच पड़ताल करते हो।
मै (मनुष्य का पुत्र) बड़ी सामर्थ और ऐश्वर्य के साथ आकाश के बादलों में जाऊँगा (मत्ती 24:30)
तब आपकी जांच पड़ताल होंगी।
प्रियों उसने सच्ची बात कही,
उसने प्रभु के प्रथम आगमन के साथ साथ, दूसरे आगमन के बारे में कहा
उसे जिसे कहना था उसे उसने कहा
और उसे जो कहना था, उसने समय के अनुसार कहा,
वह जिसे कहना था उसे उसने कहा
लेकिन महायाजक ने उस पर विश्वास नहीं किया और न ही प्रभु यीशु पर ।
इसके अलवा उसने उसे स्वीकार भी नहीं किया
पद 65 : महायाजक ने अपना नियंत्रण खो दिया और उसने अपने वस्त्र फाड़े।
लैव्यवस्था 21:10 के अनुसार उसे वस्त्र नहीं फाड़ने चाहिए।
" वह जो महायाजक हो, जिसके सिर पर अभिषेक का तेल डाला गया हो और जिसका पवित्र वस्त्रों के पहनने के लिए संस्कार हुआ हो वह अपने सिर के बाल बिखरने न दे और न वस्त्र फाड़े। "
महायाजक को अपने हृदय उंडेलना चाहिए,
लेकिन उसने अपना वस्त्र फाड़ा।
धर्मी महायाजक यहूदी जाति के बनावटी घूंघट को फाड़ता था।
मंदिर का पर्दा 70 लोगों के द्वारा भी नहीं उठाया जा सका,
जिसे उसने ऊपर से नीचे तक दो भागों में कर दिया।
इस पर्दे का सही अर्थ है "रक्षा करने वाला भाग"
महायाजक के अलावा, पवित्र स्थान में कोई नहीं जा सकता था। यदि कोई अन्दर चला जाता तो वह वहीं भस्म हो जाता था।
लेकिन आज एक साधारण व्यक्ति भी किसी प्रकार की अड़चन के बिना वह अति पवित्र स्थान में जा सकता है।
प्रचार के लिए परमेश्वर और मनुष्य के बीच में कोई अड़चन नहीं है।
सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि जिसे एक बड़ी कैंची से नहीं काटा जा

सकता था उसे मसीह ने ऊपर से नीचे तक फाड़ डाला।
– महायाजक को जानना चाहिए कि जीवित परमेश्वर कौन है, (पद 63)
उनके सामने जीवित परमेश्वर खड़ा था, लेकिन उन्होंने उसे नहीं पहचाना,
यही अड़चन है।
– महायाजक को जानना चाहिए था कि
कौन मसीह है और कौन झूठे मसीह है, (मत्ती 24:24)
मसीह उनके सामने खड़ा था, लेकिन उन्होंने उसे नहीं पहचाना, यही अड़चन है।
– यहूदी लोग मसीह का इंतजार कर रहे थे वह उसके सामने खड़ा था,
लेकिन उन्होंने उसे नहीं पहचाना (यूहन्ना 1:26) यही अड़चन है।
काइफा जो महायाजक था उसने कहा,
कि तुम्हारे लिए यह उत्तम है कि हमारे लोगों के लिए,
एक मनुष्य मरे, और सारी जाति नाश न हो (यूहन्ना 11:49–51)
सन् 18–36 ई. अर्थात् मनुष्य का पुत्र उनके बीच में 18 वर्षों तक रहा,
जिसे परमेश्वर ने पृथ्वी की उत्पति के पहले ही अपनी महिमा के लिए
चुना था।
लेकिन लोगों ने से नही पहिचाना – यही अड़चन है।

प्रियों,
सुसमाचार के प्रचार में आने वाली बाधाएँ ही प्राथमिक अड़चन है।
महायाजक महिमा से भरा राजा को नहीं जान सकां
यदि वह उसे जानता तो वह यीशु मसीह को पीटने की आज्ञा नहीं देता।
या उसके चेहरे पर थुकने की आज्ञा नहीं देता।
या उसे क्रूस पर नहीं चढ़ाते (1कुरि. 2:7,8)
– वहाँ के समाज के लोगों की उम्मीदें थी कि एक राजनीतिज्ञ
आयेगा, और वह हमें रोम के बंधन से छुड़ायेगा, वही हमारा मसीह है।
लेकिन एक जो उन्हें पाप के बंधन से छुड़ा सकता था।
मनुष्य जाति ने उसे उद्धारकर्ता को नहीं पहिचाना, यही अड़चन है।

प्रियों
प्रभु यीशु मसीह के सुसमाचार के लिए अड़चन क्या है?
यीशु मसीह पापियों का उद्धार करने के लिए जगत में आया,
जिनमें सबसे बड़ा मैं हूँ (1तिमु.1:15)
महायाजक के द्वारा जो अड़चनें थीं, उसके लिए उसने कभी पश्चाताप नहीं किया।
आज भी कलीसियाओं मसीही संस्थाओं बाइबल काँलेजों और लोग जो
ऊँचे पदवी पर हैं, वे प्रभु यीशु को अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार
नहीं किये हैं यही अड़चन है।
यद्यपि वे जानते भी हैं, फिर भी सार्वजनिक रूप से इसे स्वीकार नहीं करना ही अड़चन
है।
इसके लिये मुख्य रूप से दो कुंजियां हैं – "ज्ञान की कुंजियाँ" (लूका 11:52)
और "स्वर्गीय राज्य की कुंजियाँ" (मत्ती 16:19)।
लोग जिनके पास "ज्ञान की कुंजियाँ " होती है, उसे वह मजबूती से बंद कर देता है।

उसका हृदय ऐसा हो जाता है कि स्वर्गीय राज्य की कुंजियों से भी नहीं खुल सकता।

लोग जिन्होंने प्रभु यीशु मसीह पर थूका और उसका मजाक बनाया।
अरयुस (सन् 256–236 ई.) से लेकर रूडोल्फ बुल्टमैन ने अपने
(सन् 1884–1976 ई.) समय में पवित्र शास्त्र बाइबल को काफी जटिल बना दिया,
साथ ही इसमे जो दैविक कोड हर अड़चनें बना।
सबसे बड़ी अड़चन सुसमाचार सेवा के लिए बाहर से नहीं है
बल्कि हमारे अन्दर के अविश्वासियों की ओर से हैं,
वे यीशु को इंकार करते हैं साथ ही पवित्र बाइबल में त्रुटियों को ढूंढ़ते हैं।
यही सबसे बड़ी अड़चन है।

पवित्र शास्त्र बाइबल बहुत सी अड़चन के बारे में बतलाती है,
उदाहरण के लिए– पक्के खेत बहुत है, परन्तु मजदूर थोड़े हैं (लूका 10:2) यही अड़चन है।
देश के लिए दरार में खड़े होने के लिए कोई न मिलना (यहेजकेल 22:30) ही एक अड़चन है।
सेवकाई के दस धर्मीजन का न होना (उत्पत्ति 18:32) भी एक अड़चन है।
जहाँ दाऊद ने कहा, योनातन, आपके पिता, मेरे प्राण की खोज में है (1शमूएल 20:1)
मनुष्य जो एक साथ रहते हैं उनके शत्रुओं का होना भी एक अड़चन है।
हमने उसे रोका, क्योंकि वह हमारे तरह नहीं (मरकुस 9:38) है यह भी एक अड़चन है।
सेवा में पदवी के अनुसार हम में से बड़ा कौन है (लूका 22:34) भी एक अड़चन है।
इपाफ्रुदीतूस (फिलि. 2:27) के तरह बीमार होना भी एक अड़चन है।
जहाँ कार्यकर्ता यह कहते हुए बिखर जाते हैं कि
मैं पौलुस का हूँ मैं अपौलुस या मैं कैफा का होना भी एक अड़चन है।

प्रियों,
यह सब छोटी छोटी अड़चन है, इन छोटी – छोटी अड़चनों से हम नहीं बचेंगे।
वे सब हमारे जीवन में नम्रता के साथ प्रभु यीशु के नजदीक जाने में रोकती है।
अन्त में इसका परिणाम अच्छा होगा।
जितना हमें प्रभु यीशु के बारे में जानना चाहिए, उतना हम नहीं जानते हैं।
कलीसियाओं में लोग, संस्थाओं और वे जो निर्णय लेने वाले हैं, उनका प्रभु यीशु के साथ संबंध नहीं है।
क्योंकि उन्हें वचन की लालसा नहीं है और उन्हें प्रार्थना करने की लालसा भी नहीं है।
साथ ही वे पवित्र आत्मा की अधीनता में नहीं है।
संक्षेप में हम कह सकते हैं कि सुसमाचरीय सेवा में अविश्वासी होना ही अड़चन है।
क्योंकि हम सार्वजनिक रूप से प्रभु यीशु को परमेश्वर स्वीकार नहीं कर सकते है।
लोग जो इसे पढ़ रहे हैं, परमेश्वर के वचन में निरंतर बढ़ने के लिए आप अपना स्वर्ग की ओर आँखें उठायें रहें, साथ ही आप जो पिता में आशा करते हैं तो जब तक आप इस दुनियाँ में हैं तो आप सदैव प्रभु यीशु
मसीह का प्रभु के रूप में प्रचार करना है।
जब आप ऐसा करते हैं तो,
सब अड़चने चमत्कार में बदल जायेगा,

सब संकटें अद्भूत रीति से हट जायेगी।
आपके सब दुःख आनंद में बदल जायेंगे।

प्रियों,
प्राथिमिक अड़चन पर हम तीन तरह से विजय प्राप्त करते है,
• वे लोग जो ऊँचे पद पर हैं, उन्हें आप प्रार्थना में प्रभु यीशु को भी ऊँचा स्थान देना आवश्यक है।
• जब लोग ऊँचे स्थान में हैं, तो वे अपने जवन व सेवा में प्रभु यीशु को प्राथमिक स्थान नहीं देते हैं, आपका विश्वास ऐसा हो कि " उन्हें प्रभु यीशु के सामने घूटनों में आकर अपने जीभ के द्वारा यीशु को स्वीकार करेंगे। "
• लोग जो स्थान पर हैं,
बिना भय के साथ राजा अग्रीपा के मौजूदगी में वह कहता है, कि "केवल आप ही नहीं राजा अग्रीपा, आपके साथ जितने भी लोग हैं, वे प्रभु यीशु के समक्ष अपना समर्पण करेंगे"
इसी तरह बिना भय के साथ सेवा करें।

प्रियों,
यद्यपि अड़चने हो सकता है, छोटा हो या बड़ा,
लोग भारत में सुसमाचार सेवा के लिए समर्पित है,
तो हमें कोई भी अड़चन नहीं रोक सकती है।
पवित्र आत्मा हमारे संकटों को दूर करेगा।
जब तक परमेश्वर हमारी सुरक्षा करता है, तो अग्नि हमें नहीं जला सकती, शेर हमें स्पर्श भी नहीं करेगा। प्रभु की स्तुति हो।

जीवित गवाही

मैं लाल आँखों वाला एक गुस्सैल व्यक्ति हूँ और मैं लोगों के प्रति अत्यधिक कठोर व्यवहार करता था। इस तरह की जीवन शैली के पीछे का कारण यह था कि मैं नशे का आदी था! मैं शराब का आदी हो गया था और मैंने जो भी खुशी, पैसे और चीजें अर्जित की थीं, वे सब खो गयी थीं। मैंने अपने परिवार को जो मुझ पर भरोसा करते थे उन्हें केवल परेशानियां दी।

मुझे खेड़ा गाँव के सुसमाचार प्रचारकों के माध्यम से यीशु के जीवन के बारे में पता चला। मैंने एक पापी के लिए यीशु के महान प्रेम के विषय सुना। मैंने पापों की क्षमा,पवित्र जीवन और स्वर्गीय आशीषों और आन्नद के बारे में सीखा। मेरा कठोर हृदय पूरी तरह से पिघल गया। मुझे एहसास हुआ कि मैं पूरी तरह मुसीबत में था! मैंने मदद के लिए यीशु को पुकारा! जैसे–जैसे मैंने उसे खोजना शुरू किया, मेरा स्वार्थी स्वभाव खत्म होने लगा। आज यदि मेरे हाथ कुछ चाहते हैं तो वह पवित्र बाइबल है और मेरे पैरों को विश्वासियों की संगति में भाग लेना अधिक प्रिय लगता हैं। मेरी जीभ स्वीकार करती है, "उद्धारकर्ता यीशु अभी भी जीवित है"। *– विश्वासी सुखदेव सिंह, पंजाब।*

बाइबल अध्ययनः

प्रेरितों के काम 9:20

यीशु परमेश्वर का पुत्र है

पिछले अंक में हमने प्रेरित पौलुस के हृदय परिवर्तन पर मनन किया था। पौलुस जो परमेश्वर के प्रेम से प्रभावित हुआ, वह "तुरन्त" आराधनालयों में विचार करने लगा (प्रेरितों के काम 9:20)। इस अंक में हम निम्नलिखित पर विचार करने जा रहे हैं : पौलुस ने क्या प्रचार किया? उसके संदेश का विषय क्या था?

आराधनालय में पौलुस का संदेशः यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है। पौलुस का उद्देश्य था कि इस्राएलियों को यह जानना और विश्वास करना चाहिए कि मसीह परमेश्वर का पुत्र, हमारा प्रभु और उद्धारकर्ता है। सब कुछ उसी के द्वारा से और उसी में बनाया गया था। से सभी गुण "परमेश्वर के पुत्र" शब्द में ही सीमित हैं।

पौलुस ने एक सम्मानित व्यक्ति से व्यवस्था को सटीकता से सीखा। वह यीशु की विशेषताओं को तब तक महसूस करने में असमर्थ था जब तक कि उसने उसे अपने उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार नहीं किया, वह यह समझने में असमर्थ था कि यीशु मसीह ही व्यवस्था की पूर्णता है। जब उसने दमिश्क के रास्ते में और दर्शन के माध्यम से परमेश्वर के पुत्र की आवाज सुनी, तो उसे बहुत स्पष्ट रूप से अनुभव हुआ कि पुराने नियम की सभी किताबें परमेश्वर के पुत्र को प्रगट/प्रतिबिंबित करती हैं। पौलुस यीश के बारे में प्रचार करने और व्यवस्था की पुस्तक में यीशु को खोजने के लिए दमिश्क की सड़कों पर पूरा समय व्यतीत कर सकता था। तब तक वह अपनी बुद्धि से परमेश्वर को जानना चाहता था। किन्तु अब, उसने पवित्र आत्मा की मदद मांगी और व्यवस्था को पढ़ा।

उत्पति 3:5 मसीह के बारे में पहला सुसमाचार है। व्यवस्थाविवरण 18:18,19 कहता है कि मसीह मूसा की तरह एक भविष्यवक्ता है। हम भजन संहिता 22, यशायाह 53 में मसीह के कष्टों के बारे में देखते हैं और पौलुस जकर्याह 9:9 में बचाने वाले एक विनम्र राजा के रूप में मसीह की पहचान करता है। उसने भजन संहिता 118 के माध्यम से यह भी समझा कि मसीह प्रभु के नाम पर आया और इस्राएलियों ने उस कोने के पत्थर को अस्वीकार कर दिया। पौलुस को अब तक यीशु मसीह को अस्वीकार करने का दुःख भी हुआ।

आज हम अनेकों धर्मशास्त्रियों और प्रचारकों को परमेश्वर की योजना को समझे बिना सेमिनरीज से कई डिग्रियाँ और पदक प्राप्त करते हुए देखते हैं! आज हमें ऐसे लोग भी मिलते हैं जो यीशु मसीह के बारे में गलत ज्ञान देते और प्रचार करते हैं!

एक तरफ हम ऐसे लोगों को देखते हैं जो केवल समारोहों के दौरान परमेश्वर की खोज करते हैं और दूसरी तरफ कलीसियाएँ हैं जो सबसे सम्मानीय नाम यीशु का उच्चारण करने को तैयार नहीं हैं! प्रभु के लोगों को बहुतों को धार्मिकता में लाने के लिए उठना होगा। लेकिन वे चुनाव के पीछे हैं और शैतान के जाल में फंस गये हैं। यीशु ने परमेश्वर के मन्दिर में जाकर उन सबको, जो मंदिर में लेन–देन कर रहे थे, निकाल दिया, और सर्राफों के पीढ़ें ओर कबूतर बेचनेवालों की चौकियाँ उलट दीं (मत्ती 21:12)। क्या कलीसियाओं के वर्त्तमान परिदृश्य को देखकर यीशु प्रसन्न होगा। आज विद्वानों ने महायाजक, शास्त्रियों और फरीसियों से हाथ मिला लिया है। वे मसीहियत को बेचने वाले व्यापारी बन गये हैं। कितना बड़ा दर्द है! जिन लोगों के हृदय में यीशु के लिए जगह नहीं है, उन्हें कुछ भी नहीं मिलेगा, भले ही वे महान ऊँचाईयों पर चढ़ जाएं। संसार में यीशु मसीह ने अपनी सेवकाई के दौरान उसने धोखेबाज, मूर्ख और छोटे समूहों का नेतृत्व करने वाले अंधों को बुलाया।

पौलुस संसार की प्रसिद्धि को कूड़ा और अपनी धार्मिकता को मैले चिथड़ों के समान समझता है जब उसने अपना हृदय यीशु को समर्पित कर दिया, तो गमलीएल का छात्र होने के गौरव को भी कुछ नहीं समझा! यही वह समय था जब वह मरियम के समान यीशु के चरणों में आया! परमेश्वर के पुत्र को प्राप्त करने के बाद उसे यह उच्च पद प्राप्त हुआ! कितना अद्भूत है! आज, क्या हम लोगों को यह घोषणा करते हुए देखते हैं कि प्रभु यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है? पौलुस ने स्वीकार किया कि मसीह परमेश्वर का पुत्र है। वह इसके दुष्परिणामों से परिचित था। फिर भी वह बिना डरे इस नाम का प्रचार करता रहा!

महायाजक ने यीशु से पूछा,"यदि तू परमेश्वर का पुत्र मसीह है, तो हमसे कह दे"। यीशु ने उससे कहा, "तू ने आप ही कह दिया"। इस पर महायाजक ने अपने वस्त्र फाड़े और कहा, "इसने परमेश्वर की निदा की अब हमें गवाहों का क्या प्रयोजन? "कृयह वध होने के योग्य है," (मत्ती 26:63,64,65,66)। यह न

केवल महायाजक के लिए, बल्कि उसके बाद आए यरूशलेम के सभी लोगों की भी विफलता थी – परमेश्वर का वचन और इतिहास इसको घोषित करता है (मत्ती 23:33–39, लूका 23:27–30)। यरूशलेम पूरी तरह से नष्ट हो गया था, और यहूदी 70 ईस्वीं तक तितर–बितर हो गए थे। यरूशलेम का मंदिर भी पूरी तरह से तबाह हो गया था। इस्राएली यीशु के शब्दों को समझने में असमर्थ थे जब उन्होंने कहा, हे यरूशलेम की पुत्रियों, मेरे लिए मत रोओ, परन्तु अपने और अपने बच्चों के लिए रोओ।"

यरूशलेम में वह मंदिर जिसे इस्राएली पवित्र मानते थे, वह ध्वस्त कर दिया गया क्योंकि उस समय के अगुवों ने यीशु मसीह को परमेश्वर के पुत्र के रूप में नहीं पहचाना। वे पदों के पीछे भागते रहे, अपनी शक्ति का गलत इस्तेमाल करते थे, स्वार्थी थे, अपवित्र और ईर्ष्या से पूर्ण थे, वे सब्त के दिन को मानते थे जो यीशु की शिक्षाओं के अनुसार नही थे, उन्होंने मंदिर को गंदा कर दिया इसलिए परमेश्वर की महिमा वहाँ दिखाई नहीं दे रही थी। यही स्थिति वर्त्तमान संसार में देखने को मिलती है! कलीसियाएं शैतान का जाल बन गई है जो मनुष्य के पुत्रों को नरक के नागरिकों में परिवर्तित/रूपातंरित कर रहे हैं (मत्ती 23:15)।

जब कलीसियाएं यीशु मसीह को परमेश्वर का पुत्र घोषित करेगी तो स्वर्ग आन्नदित होगा जिसके परिणाम स्वरूप पश्चाताप् करने वाले लोगों की संख्या में वृद्धि होगी। दूसरी ओर, जब कलीसियाएं इतिहास, सामाजिक विचार, दर्शन और मनोविज्ञान का प्रचार करती हैं और जब वे सत्य को तोड़–मरोड़ कर पेश करती हैं, तो नरक कलीसियाओं से आने वाले नागरिकों का स्वागत करनें में प्रसन्न होता है।

वर्त्तमान युवा पीढ़ी जो अपनी बुद्धि से विश्व को अपनी ओर मोड़ना चाहती है, उसे यीशु को परमेश्वर के पुत्र के रूप में देखना होगा! वर्त्तमान कलीसियाओं और समाज को पौलुस जैसे सेवकों की मुख्य आवश्यकता है जिसने बुद्धिमानों, महायाजकों, शास्त्रियों और फरीसियों के सामने घोषणा की कि "मसीह परमेश्वर का पुत्र है"। आइए, हम ऊँची आवाज से घोषणा करें कि "यीशु परमेश्वर का पुत्र है और वही मसीह है" ताकि हम और हमारी पीढ़ी अनंत काल को विरासत में प्राप्त कर सकें! *– पोन सुबर्सन*

मेवाड़ी - वागड़ी मेला

21–22 फरवरी 2024
मानस कार्यक्षेत्र, राजस्थान

वर्त्तमान समय में मेवाड़ी और वागड़ी जन–जाति समूह जीवन –जल में कदम रख रहे हैं और उसमें से पानी पी रहे हैं। राजस्थान में गाँवों की भलाई के लिए सुसमाचार प्रचारकों ने जो प्रयास किये हैं, उन पर परमेश्वर की महान आशीष हुई है। उदयपुर प्रांत के 192 गाँवों में जारी कार्य के परिणामस्वरूप, 2320 लोग विश्वासियों की सूची में शामिल हो गए हैं। इनमें 1550 लोग मेवाड़ी–वागड़ी मेले में शामिल हुए। वे गवाहियों/साक्षियों और परमेश्वर के वचन के माध्यम से मजबूत किए गए और उन्होंने अपने रिश्तेदारों के बीच शांति के दूत बनने के लिए खुद को प्रतिबद्ध भी किया है।

मानस क्षेत्र के आस–पास के गाँवों को चिकित्सा सहायता प्रदान करना भी उनके लिए एक बड़ी आशीष थी। हमारा प्रभु उन सुसमाचार सेवकों के माध्यम से अपनी महिमा के लिए बड़े से बड़े आश्चर्यकर्म कर रहा है जिन्होंने स्वयं को प्रभु के कार्य के लिए अपने परिवारों के साथ पूरी तरह से प्रभु के हाथों में समर्पित कर दिया है। दोनों मेलों में लोगों ने सुसमाचार के माध्यम से गाँवों और लोगों के व्यक्तिगत जीवन में देखे गए परिवर्तन के कारण अपनी साक्षियों को बांटा! धन्य हैं वे लोग जिन्होंने इसके लिए काम किया, प्रार्थना की और बहुमूल्य दान को दिया! हाल्लेलूय्याह! *– मोहनलाल मीणा*

हो - संताली मेला

14–16 फरवरी,
बनियाजोड़ी, ओडिशा

ओडिशा में आयोजित " हो–संताली मेला" में 2000 लोग एकत्र हुए, जिन्होंने यह समझ लिया कि आंतरिक मनुष्य के लिए आन्नद और शांति केवल सुसमाचार के माध्यम से ही है। गाँव के स्थानीय प्रशासकों और अगुवों ने बहुत सहयोग दिया और यह परमेश्वर के हाथों के कार्यों का गवाह बनने के लिए परमेश्वर की अगुवाई थी। मेला "मसीह के भय से एक दूसरे के अधीन रहो" विषय के तहत आयोजित किया गया था।

(इफि.5:21) रेव्ह. डॉ.सुबर्सन, रेव्ह.डॉ. बेंजामिन, रेव्ह.जगनाथ ने परमेश्वर का वचन का प्रचार किया। प्रभु उन सुसमाचार सेवकों को भरपूर आशीष दें जो कड़ी मेहनत करते रहे और उन सभी विश्वासियों को भी जिन्होंने विश्वासियों के लिए भोजन, पानी और रहने की व्यवस्था की। हो और संथाली लोग पीढ़ियों तक फलते–फूलते और आशीषित होते रहें।

– जगनाथ हेम्ब्रम

जटापु मेला

10–11 फरवरी 2024,
गोराती, आन्ध्र प्रदेश

पहाड़ों पर सुसमाचार सेवकों की संख्या बढ़ाने के लिए हर वर्ष एक बार "जटापु मेला" आयोजित किया जाता है, ताकि वे उन सभी जन–जाति समूहों और गाँवों तक पहुँच सकें जहाँ अब तक सुसमाचार नहीं पहुँचा है।

हमें आशा कर रहे थे कि आंन्ध्र–प्रदेश के गोराती मैदान में आयोजित मेले में 1000 लोग आएंगे। लेकिन पूर्वी घाट पर फैले 50 से अधिक गाँवों के 1100 लोग दो दिवसीय सभा में शामिल हुए। हमारा परमेश्वर जटापु लोगों के मध्य तक एक महान चट्टान, उनके प्रिय स्वामी, उनके उद्धारकर्ता और अंधकार को दूर करने वाले प्रकाश के रूप में उन तक पहुँचा हैं। जटापु लोगों की हृदय से किया गया पश्चाताप्, जो बड़ी संख्या में आगे आए और संध्या समय के दौरान स्वंय को सेवा के लिए प्रतिबद्ध किया,यह उल्लेखनीय है। उन्होंने यह कहते हुए साक्षी दी कि वे यीशु मसीह के लहू के गवाह हैं जिसने उन्हें शुद्ध किया, वे चाहते हैं कि जिस प्रेम ने उन्हें छू दिया, वह पहाड़ों पर रहने वाले सभी लोगों को भी छुने पाएं, प्रभु की स्तुति हो!

सेवा में सहयोगी के रूप में गुंटूर से आए 256 लोगों को चिकित्सा सहायता प्रदान की गई। बाल विभाग के हमारे सदस्यों ने 120 बच्चों के साथ परमेश्वर के प्रेम को बांटा।

बपतिस्मा सभा और पवित्र भोज सेवा के साथ अंतिम दिन का कार्यक्रम इस बात का गवाह था कि परमेश्वर जटापू लोगों के जन समूहों के बीच अपनी इच्छा पूरी कर रहा है। विश्वासी और सुसमाचार प्रचारक रावदा रामभद्रपुरम और बब्बीडी क्षेत्रों में भी ऐसी सभाएं आयोजित करने के लिए तैयारी कर रहे हैं। हाल्लेल्लूय्याह

– अप्पाला नायडू!

सौरा मेला

16–18 फरवरी 2024
कोठागुडा, आन्ध्र प्रदेश

ये आश्चर्यकर्म के वे दिन हैं जब परमेश्वर द्वारा आशीष देने और पीढ़ियों पर अपनी आत्मा उंडेलने की प्रतिज्ञा पूरी हुई। 27वां वार्षिक मेला कोट्टुरू मंडल में तीन दिनों के लिए आयोजित किया गया था। सुसमाचार सेवक आराधना भवन के अगुवे और समन्वयक, जो एक साथ एकत्र हुए और पिछले तीन महीनों से निरंतर प्रार्थना और अन्य शारीरिक कार्यों के माध्यम से मेले की सफलता के लिए प्रयास किए, उन्होंने परमेश्वर के नाम को महिमांवित किया। सौरा कलीसियाओं सेवकों और उनके परिवारों के सैकड़ों अगुवे एक साथ एकत्र हुए और प्रेरितों के काम 9:31 के माध्यम से आशीषित हुए। 33 सदस्यों वाला संगीत दल पूरी तरह से पवित्र आत्मा द्वारा अभिषिक्त था। इस दल ने उन्हें सुसमाचार कार्य और कलीसिया संबंधित सेवकाई के लिए प्रतिबद्ध होने के लिए प्रोत्साहित किया। हम संध्या प्रार्थना समय, बपतिस्मा सभा और पवित्र भोज सेवा के दौरान परमेश्वर की उपस्थिति को महसूस करने में सक्षम रहे।

मेले के अंतिम दिन के दौरान हम ऐसे कई लोगों को देख पाए जिन्होंने यीशु की आवाज सुनकर उन भेड़ों को इकट्ठा किया जो अभी भी बाड़े में नहीं हैं!

प्रभु उन सुसमाचार सेवकों का सम्मान करे जिन्होंने सभाओं लोगों को चिकित्सा सहायता प्रदान करने में सहायता की और बच्चों की कक्षाएं संचालित करके बच्चों की देखभाल की। हम उन सभी को भी धन्यवाद देते हैं जिन्होंने भोजन तैयार किया और परोसा, परिसर का रख –रखाव किया, साउंड सिस्टम और दिन–रात काम करने वाले सभी लोगों को भी हृदय से धन्यवाद! प्रभु की स्तुति हो !

– शिविर समन्यक!

नेटवर्क चेयरमैन की ओर से...

हमारे प्रभु यीशु मसीह के पुन जीवित नाम पर पुनरूत्थान दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं!

यह परमेश्वर का असीम अनुग्रह है कि भारत में हमारे सभी सुसमाचार क्षेत्रों के लोग यीशु मसीह को परमेश्वर के पुत्र के रूप में स्वीकार कर रहे हैं और इस प्रकार जीवित वचन की घोषणा करते हैं जो कहता है, "जिसका परमेश्वर यहोवा है, वह क्या ही धन्य है" (भजन संहिता 144:15)। जटापु लोग आन्ध्र प्रदेश के श्रीकाकुलम, मान्यम और विजयनगरम जिलों में रहते हैं जो पर्वतीय क्षेत्रों में स्थित और फैले हुए हैं। ऐसा कहा जाता है कि लगभग 2 लाख 50 हजार जटापू लोग 1000 से अधिक गाँवों में रहते हैं।

1993 से मेरी स्मृतियों को लिखने के लिए प्रभु ने मेरी अगुवाई की। हम यीशु मसीह की फिल्म् दिखाने के लिए प्रोजेक्टर बॉक्स और हमारी "गोस्पेल" गाड़ी में रखे गये साऊंड सिस्टम के साथ डोनुबाई गाँव पहुँचे। परमेश्वर ने इस फिल्म के माध्यम से जटापु गाँव में हमें नए संपर्क दिए जहाँ हमारे पास पहले कोई संपर्क नहीं थे। लोगों को परमेश्वर के वचन में बहुत रूचि थी। वहाँ से मनमाधा राव और रेलैया को 1994 में हैदराबाद प्रशिक्षण केंन्द्र में पहले सत्र/बैच में प्रशिक्षित किया गया और 1995 में डोनुबाई पहाड़ पर कार्य के लिए मिशनरी के रूप में भेजा गया और इस तरह यहाँ सुसमाचारीय सेवकाई की स्थापना की गई। हमारे परमेश्वर ने हमारी सेवाओं को आशीषित किया जैसे – रेडियो कार्यक्रम – सुसमाचार वाहन दल/समूह के माध्यम से सुसमाचार फिल्म दिखाना– प्रशिक्षण केंन्द्र में प्रशिक्षण। बचाए गए लोगों से सुसमाचार कलीसियाएं भरती गईं!

वर्त्तमान में 62 जटापु सुसमाचार सेवक और उनके परिवार परमेश्वर के अनुग्रह से इस पहाड़ के ऊपर स्थित 354 गाँवों में सुसमाचार प्रचार कर रहे हैं। पवित्र आत्मा ने हमें 92 आराधना समूह शुरू करने में सक्षम बनाया! 5000 से अधिक जटापु लोग 75 गाँवों में एकत्र होते हैं जहाँ आराधना भवन बनाए गये हैं। आराधना प्रति सप्ताह आयोजित की जाती है, और परमेश्वर का नाम महिमांवित होता है। हाल्लेलूय्याह।

प्रार्थना करते रहें कि 11 क्षेत्रों में आराधना भवन का निर्माण 6 महीनों में पूरा हो जाए। जटापु लोगों के बीच सेवा पहले चरण में तेलूगु कार्यकर्ताओं के माध्यम से आरम्भ की गई थी। लेकिन अब, मूल जटापु कार्यकर्ताओं के प्रयासों से सुसमाचार 100 प्रतिशत फैल गया है। हम सुसमाचार क्षेत्रों की आराधना में विकास, सेवकाई में वृद्धि और विश्वासियों और उनकी पीढ़ी के साथ दर्शन को फैलाने के प्रयासों को देखकर अत्यधिक धन्य है। "आओ चलें और अधिपत्य में ले लें" शीर्षक के तहत सुसमाचार क्षेत्रों में हर दो महीने में एक बार तीन दिनों की एक विशेष सभा आयोजित की जाती है। कलीसिया और सुसमाचार सेवकों में विश्वास करने वाले लोग शामिल होते जाते हैं और पड़ोसी गाँवों में भी प्रार्थना के लिए जाते हैं। सुसमाचार के माध्यम से नए गाँवों तक पहुँचा जा रहा है और यीशु पर विश्वास और उनके प्रेम के माध्यम से उनकी अज्ञानता, पाप, बंधन और अभिशाप दूर हो गए है। पहली पीढ़ी के विश्वासियों के लिए हर क्षेत्र में एक–दिन यीशु के साथ नामक शिविर उन्हें परमेश्वर के वचन और संगति में बढ़ने में सक्षम बनाता है।

डोनुबाई क्षेत्र में जटापु वार्षिक सम्मेलनः जटापु सेवकाई दल/समूह की रणनीति के

अनुसार विश्वासी हर साल 4 वेब केंन्द्रों में आयोजित सम्मेलनों में इकट्ठा होते हैं। सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य विश्वासियों को संगति, एकता, भाईचारे के प्रेम, परमेश्वर की सामर्थ्य और सुसमाचार कार्यों में बढ़ने में सक्षम बनाना है। 2024 में आयोजित 4 जटापु सम्मेलनों में से एक 20 से 21 फरवरी तक डोनुबाई पहाड़ पर आयोजित किया गया था। हमारा पहला सेवकाई क्षेत्र सुसमाचार फिल्म की विशेषता वाले सुसमाचार वाहन के माध्यम से 1993 में शुरू किया गया था! जिसमें हमारे इन क्षेत्रों से 650 विश्वासी डोनुबाई पर्वत पर एकत्र हुए, जिसका वातावरण सुखद था, और वे प्रभु में और वचन में मजबूत हुए। जटापु लोग उस दिन से जब सुसमाचार उनके साथ प्रचार किया गया था अपने समाज, वित्त, व्यवसाय, शिक्षा और स्थिति में आशीषित होते चले गयें और अब वे सबसे अधिक धन्य लोग होने जा रहे हैं। जिन गाँवों के लिए हम प्रार्थना करते हैं और उनका समर्थन करते हैं, उन्हें प्रभु की आशीष मिलती रहे!

एक स्नेहपूर्ण अनुरोधः

डोनुबाई श्रीकाकुलम जिले में जटापु क्षेत्र का मुख्यालय है। यहाँ, हमने वर्ष 1997 में एक आराधना भवन का निर्माण किया, और यहाँ एक एकड़ भूमि पर एक चाइल्ड केयर सेंटर और लर्निंग सेंटर की स्थापना की गई है। वर्त्तमान में सेवकाई को विकसित करने के लिए हमें उसका नवीनीकरण करने की आवश्यकता है। हमने अभी भी परिसर की दीवार का निर्माण नहीं किया है और इसलिए हमारे लिए इस केन्द्र की सुरक्षा करना मुश्किल हो रहा है। हमें चारदीवारी बनाकर काम शुरू करना होगा।

चरदीवारी के निर्माण के लिए 6 लाख रूपयों की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त बोरवेल में पर्याप्त पानी नहीं होने के कारण हमें एक और बोरवेल खोदने के लिए 3 लाख रूपये चाहिए। जटापु सेवकाई क्षेत्र की बढ़ोतरी के लिए आराधना भवन के नवीनीकरण और परिसर के भीतर भवनों के निर्माण के लिए 3 लाख रूपयों की जरूरत है। हम आपके सामने स्पष्ट कर रहे हैं कि हमें कुल मिलाकर 10 लाख रूपयों की आवश्यकता है। आपकी सहायता जटापु समाज के उत्थान और बच्चों, युवाओं और महिलाओं के बीच सेवकाई को अधिक प्रभावशाली तरीके से करने में एक बड़ी सहयोग होगी।

कृपया परिसर की दीवार, बोरवेल, आराधना भवन बच्चों के लिए, घर के निर्माण और प्रशिक्षण केंन्द्र के रखरखाव में हमारी मदद करें। अपनी प्रार्थनाओं और दान के माध्यम से इस सेवकाई का सहयोग करने के लिए आगे आएं। प्रभु आपको और आपके परिवार को भरपूरी की आशीष दें।

हैदराबाद — मसीह में आपका भाई

13.03.2024 — *पी. सेल्वाराज, चेयरमैन विश्ववाणी नेटवर्क*

बाधाओं को पार करना...

– रेव्ह. डॉ. इम्मानूएल ग्नानाराज, निर्देशक – प्रेयर नेटवर्क

वर्ष 1981 में पहली बार प्रभु ने मुझे मेरी सेवकाई में एक महान परिवर्तन दिया। मुझे प्रभु ने वर्ष 1976 में पूर्णकालिन सेवकाई के लिए बुलाया था। इसलिए, मैंने अपनी नौकरी से इस्तीफा दे दिया और सुसमाचार प्रचार करने के लिए "कश्मीर इवैंजेलिकल फेलोशिप" में शामिल हो गया। जम्मू कश्मीर के पर्वतीय क्षेत्रों में पहले कुछ साल ग्रामीणों के साथ सुसमाचार प्रचार करने के लिए भाषा सीखने, बाइबल का ज्ञान प्राप्त करने और प्रशिक्षण पद्धतियाँ प्राप्त करने में बीत गए। थोड़ा अनुभव प्राप्त करने के बाद, मैंने उन गाँवों में घर–घर जाकर सुसमाचार बांटना आरम्भ कर दिया, जहाँ मुझे बहुत साहस के साथ रखा गया था।

जैसे–जैसे में आगे बढ़ा,परमेश्वर ने मुझे सेवा में एक अलग मार्ग दिखाया। मुझे व्यक्तिगत रूप से लोगों को प्रचार के बजाय सामाजिक कार्यों में स्थानांतरित कर दिया गया। जिस गाँव में मुझे काम करना था, वह समुन्द्र तल से 7000 फीट की ऊँचाई पर था। बर्फबारी के दौरान मुझे गाँव तक पहुँचने के लिए 36 कि.मी. पैदल चलना पड़ता था। मैंने अपने परिवार को दोपहिया वाहन पर ले जाने का निर्णय किया। लेकिन जब भी मैंने अपनी यात्रा शुरू की, मुझे बारिश ने रोक दिया। इस तरह, मैं उस जगह तक नहीं पहुँच पा रहा था जहाँ मुझे काम करने की जरूरत थी। उस समय, मेरे विश्वास के बारे में एक बूढ़े व्यक्ति ने मुझे चुनौती दी थी। तब मुझमें बाधाओं को पार करने का साहस आया। मैनें अपनी धर्मपत्नी और बेटी के साथ पहाड़ों पर अपनी यात्रा शुरू की। हमने 90 कि.मी. की यात्रा की। सड़क के सबसे अच्छे हिस्से और 28 कि.मी. लम्बी मौसम के अनुकूल सड़क को पार करने में और 6 घंटे लगने वाले थे। यात्रा में अत्यधिक परेशानियों के बाद हम अपनी मंजिल तक पहुँच गये। जो बारिश हमें परेशान कर रही थी वह रात से ही बंद हो गई। कितना अद्भूत है! हमने सेवकाई आरम्भ किया!

दो प्रकार की बाधाएँ:

1. शैतान की ओर से बाधाएँ:

हमें दो तरह की बाधाओं का साम्हना करना पड़ता है, चाहे वह सेवकाई हो या जीवन। इन्हें सही ढंग से समझना और समझदारी से काम लेना आवश्यक है। सबसे पहले, परमेश्वर की लोगों को अपना कार्य करने से रोकने के लिए शैतान की ओर से बाधाएँ। यह सिर्फ हमारे विश्वास की परीक्षा है। हमें इन परेशानियों को विश्वास के साथ पार करना होगा। क्या मूसा ने लाल सागर पार नहीं किया? हमें लाल सागर के दरवाजे खोलने के लिए विश्वास के कदम उठाने की आवश्यकता है। हमें विश्वास के साथ साहस की भी आवश्यकता है। जब हम अपने जीवन में लाल सागर जैसी परेशानियों को पार करने के बाद पीछे मुढ़कर देखते हैं, तो हम कभी भी यह नहीं समझ पाते कि हमने इसे कैसे पूरा कर लिया। यह प्रतिज्ञा की " कि जिन मिस्त्रीयों को तुम आज देखते हो, उनको फिर कभी न देखोगे" (निर्गमन 14:13) परमेश्वर के उन बच्चों के लिए हैं जो अपनी

परेशानियों में विश्वास के साथ आगे बढ़ते हैं। एक लाख गाँवों तक पहुँचने का हमारा स्पष्ट दर्शन है। यदि हम पीछे हटते हैं, तो हम परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते (इब्रा. 10:38)। विश्वास शैतान द्वारा लाए गए विरोधों और बाधाओं पर विजय प्राप्त करेगा।

2. पवित्र आत्मा की ओर से बाधाएँ:

हम जानते और हमें उम्मीद थी कि रास्ते में शैतान हमें अवश्य परेशान करेगा। लेकिन हम कैसे सोच सकते हैं कि पवित्र आत्मा हमें रोक सकता है। मेरे साथ प्रेरितों के काम 16 को खोलें। हम प्रेरित पौलुस की मिशनरी यात्रा के बारे में पढ़ते हैं। "वे फ्रुगिया और गलातिया प्रदेशों में से होकर गए, क्योंकि पवित्र आत्मा ने उन्हें एशिया में वचन सुनाने से मना किया। 7 पद उन्होंने मूसिया के निकट पहुँच कर बैथेनिया मे ंजाना चाहा, परन्तु यीशु की आत्मा ने उन्हें जाने न दिया (पद 6 और 7)।

कई बार, पवित्र आत्मा हमारी योजनाओं को रोक देता है और उन्हें स्वंय ही क्रियान्वित करने का प्रयास करता है। कभी–कभी, यह विरोध के रूप में भी सामने आ सकता है। या हो सकता है कि इस मामले में हमारे बीच एकता न हो, या यह बारिश की तरह हो सकता है जिसने हमारी यात्रा रोक दी थी। लेकिन हम यह कैसे समझ सकते हैं कि यह शैतान की ओर से था या पवित्र आत्मा की ओर से?

बिलाम ने सोचा कि वह परमेश्वर का कार्य कर रहा है। उसने यहाँ तक कहा कि वह काम नहीं करेगा जो परमेश्वर को पंसद नहीं है। परन्तु उसके हृदय में यह इच्छा उत्पन्न हुई कि इस्राएलियों को शाप देकर धन कमाऊँ। उसने सोचा कि वह थोड़ा बहुत कमा लेगा। गधा रास्ता रोकने वाले स्वर्गदूत को देख सकता था, लेकिन भविष्यद्वक्ता की आँखें बंद थी।

बिलाम के तरीके परमेश्वर को प्रसन्न नही कर सकते थें। यह संसारिक था और यह हमारे लिए एक चेतावनी भी है। "इसी प्रकार, जब गेहजी नामान के पीछे गया, तो उसको आंतरिक विवेक ने उसे रोक दिया। यहीं पर एलीशा ने उससे पूछा, "जब वह पुरूष इधर मुँह फेरकर तुझ से मिलने के लिए अपने रथ से उतरा, तब से वह पूरा हाल मुझे मालूम था"(2राजा 5:26)। पवित्र आत्मा द्वारा रखी गई बाधाओं को शांत करने से उसे क्या प्राप्त हुआ? यह नामान का कोढ़ था! इसलिए, जब पवित्र आत्मा हमें प्रतीक्षा करने के लिए कह रहा है तो हमें सचेत रहना चाहिए और हमें उसके अनुसार कार्य करना चाहिए। हमें उसकी आवाज सुनने की जिज्ञासा रखनी चाहिए।

हमने पढ़ा कि पवित्र आत्मा ने पौलुस को एशिया में वचन का प्रचार करने से रोका (प्रेरितों के काम 16:6)। लेकिन पद 9 में, हम देखते हैं कि वही पवित्र आत्मा उन्हें मकिदुनिया ले गया और प्रेरितों के काम अध्याय 19 में, हम देखते हैं कि परमेश्वर ने उन्हें सही समय पर एशिया में लाया और उन्हें अपनी महिमा के लिए इस्तेमाल किया। परमेश्वर हमे सीधे रास्ते पर ले चलता है। जब वह हमें रोके तो हमारी अंतरात्मा को उसकी आवाज सुनने के लिए प्रशिक्षित होना चाहिए और हमें तुरंत उसकी बात माननी चाहिए। सेवकाई में यह आवश्यक है। हमें धैर्यपूर्वक परमेश्वर के समय की प्रतीक्षा करनी चाहिए।

आराधना भवन और चारदीवारी बनाने में विरोधः

1. बाहर से आने वाली बाधाएँः

बेबीलोन के राजा के शासनकाल के दौरान इस्राएलियों को बंदी बना लिया गया था। उन्हें फारस के शासनकाल के दौरान यरूशलेम में मंदिर बनाने के लिए उन्हें बंदीगृह से भेजा गया था। हमने एज्रा अध्याय 3 में पढ़ा कि उन्होंने मंदिर का पुननिर्माण शुरू कर दिया। हम अध्याय 4 में यह भी देखते हैं कि बिन्यामीन और यहूदा के शत्रु विभिन्न तरीकों से उनका विरोध कर रहे थे। उन्होंने उनके विरूद्ध काम करने के लिए अधिकारियों को रिश्वत दी (4:5), उनके विरूद्ध आरोप लगाया (4:6), उन्होंने राजा से काम रोकने का आदेश जारी करने के लिए आदेश मांगा (4:21)। परिणाम स्वरूप परमेश्वर के भवन का काम यरूशलेम में हैं, रूक गया और फारस के राजा दारा के राज्य के दूसरे वर्ष तक रूका रहा (4:24)। जैसा कि हम अध्याय 5 को पढ़ना जारी रखते हैं, जब काम रोकने का आदेश हुआ, तो उन्होंने भविष्यद्वक्ताओं से प्राप्त प्रोत्साहन/शब्दों के माध्यम से मंदिर का पुननिर्माण करना शुरू कर दिया और वे साहसपूर्वक परमेश्वर के लिए खड़े हुए। अंत में, उन्हें राजा की पुस्तक मिल गई और परमेश्वर का कार्य बिना किसी समस्या के चलने लगा और सारा खर्च राजा द्वारा वहन किया गया। अध्याय 6 पद 15 में हम पढ़ते हैं कि मंदिर का निर्माण कार्य समाप्त हुआ।

परमेश्वर की इच्छा के लिए मनुष्य द्वारा लाये गये विरोध कुछ नहीं कर सकते। इसी प्रकार, हम नहेम्याह के समय में देखते हैं, कि उसके पास पूर्व अनुमति होने के बावजूद भी दीवार का पुननिर्माण करने में बड़ी–बड़ी चुनौतियाँ थीं। क्या हमने नहीं पढ़ा कि नहेम्याह धमकियों और विरोधों के बीच 52 दिनों में दीवार बनाने में सफल हो गया?

2. अंदर से बाधाएँः

पौलुस 2कुरिन्थियों 7:5 में लिखते हैं,"कृबाहर लड़ाईयाँ, भीतर भयंकर बातें थीं"। हम अपनी आँखों से देख सकते थे, सेवा के लिए बाहर से आती हुई विरोधो को। लेकिन हमारे भीतर कौन से भय हैं जो हमारी उन्नति में बाधक हैं, हाग्गै अध्याय 1 पढ़ें। देखें कि राजा कुस्रू के समय बंदी बनाए गए इस्राएलियों ने क्या किया जब उन्हें मंदिर के पुननिर्माण के लिए भेजा गया था। "क्या तुम्हारे लिये अपने छतवाले घरों में रहने का समय है, जबकि यह भवन उजाड़ पड़ा है" (हाग्गै 1:4)। यह चेतावनी क्यों दी गई? पद 2 कहता है, "ये लोग कहते है, कि यहोवा का भवन बनाने का समय नहीं आया है"। वे विश्वासियों के जीवन में आलस्य, थकान और इसके परिणाम स्वरूप होने वाले अनिच्छुक शब्दों के समान हैं। क्या हम हाग्गै के दिनों के लोगों की तरह यह कहते हुए अनिच्छुक हो सकते हैं कि सुसमाचार प्रचार करने का समय अभी नहीं आया है, क्योंकि इसे प्रचार न करने का आदेश पारित हो चुका है? विरोध तो होगें, लेकिन वे अस्थायी होंगे।

फारस राजा द्वारा पारित आदेश की तरह, सरकार एक आदेश अवश्य जारी करेगी, "पूरी दुनिया में जाओ और सुसमाचार का प्रचार करो..."। क्या इस आदेश ने हममे उत्साह उत्पन्न नहीं किया, आइए, हम निर्माण करें। आइए, हम इन बाधाओं को पार करते हुए आज्ञा का पालन करें।

कार्यक्षेत्र के समाचार

स्तुति - प्रार्थना

...तू यहोवा है और तू जैसा चाहेगा, वैसा ही करेगा। (योना1:14)

जम्मू कश्मीर

परमेश्वर की स्तुति होः 3 परिवारों ने अपने पापों का पश्चाताप किया। परगवाल क्षेत्र में आयोजित सुसमाचार सभा के माध्यम से कई लोगों का उद्धार हुआ। स्वंखा क्षेत्र के युवा सुसमाचार सुनने में रूचि ले रहे हैं। प्रभु ने भाई कस्तुरी लाल को बड़ी दुर्घटना से बचाया।

प्रार्थना करेंः बपतिस्मे के लिये तैयार लोगों के लिये। 5 परिवार जो कटली आराधना समूह में शामिल हुये हैं, वे परमेश्वर के वचन में दृढ़ होने के लिये। इस कार्यक्षेत्र के उद्धार से वंचित क्षेत्रों के लिये पूर्णकालीन सेवकों की आवश्यकता के लिये। इस क्षेत्र में आत्माओं की कटनी के लिये आयोजित कैंप के माध्यम से पवित्र आत्मा निरंतर कार्य करने के लिये।

हिमाचल प्रदेश

परमेश्वर की स्तुति होः इस कार्यक्षेत्र के कई गाँव में खोजियों की सभा आयोजित किया गया। क्षेत्र सर्वेक्षण के माध्यम से सेवकाई के लिये 8 गांवों को चिन्हित किया गया। 10 लोगों ने मसीह में अपने नए विश्वास को स्वीकार किया।

प्रार्थना करेंः 12 युवा जिन्होंने पूर्णकालीन सेवकाई के लिये स्वयं को समर्पित किया, उनके लिये प्रशिक्षण प्रारम्भ होने के लिये। कार्यकर्ता मनोहर का बेटा

समर्थ जो एनीमिया से ग्रसित हैं, उन्हें पूर्ण चंगाई मिलने के लिये। राजा के बाग क्षेत्र में आराधना भवन का निर्माण कार्य पूरा होने के लिये, कृपया प्रार्थना करें।

पंजाब

परमेश्वर की स्तुति हो: प्रभु के अनुग्रह से इस क्षेत्र में 3 आराधना समूह और 6 बाइबल अध्ययन समूह प्रारम्भ किया गया। इस क्षेत्र में आयोजित युवा कैंप के माध्यम से 13 युवाओं ने स्वयं को प्रभु के लिये समर्पित किया। कार्यकर्ता लखविंदर सिंह को डेंगू बुखार से चंगाई मिली और उन्होंने पूनः प्रभु की सेवा प्रारम्भ की। इस क्षेत्र में आयोजित खोजियों की सभा के माध्यम से 30 लोगों का उद्धार हुआ और वे विश्वासियों की संगति में शामिल हुये।

प्रार्थना करें: 27 लोग जिन्होंने मसीह में अपने नए विश्वास को स्वीकार किया, वे वचन में दृढ़ होने के लिये। 10 क्षेत्रों में आयोजित किए गए युवा कैंप के माध्यम से सेवकाई फलवंत होने के लिये। बुलोवाल और पज्जोदेवोटा क्षेत्र के विश्वासियों की आत्मिक उन्नति के लिये। परमानन्द प्रांत में जिन लोगों ने परमेश्वर का वचन सुना, वे वचन में दृढ़ होने के लिये, कृपया प्रार्थना करें।

उत्तराखण्ड

परमेश्वर की स्तुति हो: 11 गाँव में आराधना समूह प्रारम्भ किया गया। 3 आराधना समूह जो किसी कारण से बंद हो गया था, वह पूनः प्रारम्भ किया गया। इस क्षेत्र में आयोजित खोजियों की सभा में 24 लोगों ने अपने पापों का पश्चाताप किया। 7 युवा पूर्णकालीन सेवकाई के लिये आगे आये।

प्रार्थना करें: बपतिस्में के लिये तैयार लोगों के लिये। इस क्षेत्र में सेवकाई फलवंत होने के लिये। इस प्रांत के बाइबल अध्ययन समूह में नयी आत्मायें शामिल होने के लिये, कृपया प्रार्थना करें।

हरियाणा

परमेश्वर की स्तुति हो: 3 लोगों ने मसीह में अपने नए विश्वास को स्वीकार किया। भाई अरविंद और उनका परिवार इस क्षेत्र में शांति के पात्र हैं। विश्वासी मक्को को प्रभु यीशु के नाम में चंगाई मिली, वह अपनी गवाही दूसरों के साथ बाँट रहे हैं। खोजियों की सभा के माध्यम से कई लोगों ने सुसमाचार सुना।

प्रार्थना करें: युवाओं की सभा में शामिल होने वाले युवा स्वेच्छा से सेवकाई में शामिल होने के लिये। चरन, सागर और सुनीता जो बीमार हैं, उन्हें चंगाई मिलने के लिये। इस क्षेत्र में पूर्णकालीन सेवकों की आवश्यकता के लिये। इस क्षेत्र में निरंतर चलने वाले दबोरा कैंप में नयी आत्मायें शामिल होने के लिये, कृपया प्रार्थना करें।

दिल्ली

परमेश्वर की स्तुति हो: इस क्षेत्र के बच्चों की सेवकाई के माध्यम से हमें नए सम्पर्क प्राप्त हुये। 3 परिवार बाइबल अध्ययन समूह में शामिल हुये। अंकुस और पूजा को प्रार्थना के माध्यम से चंगाई मिली। विश्वासी बैता के फलदायी जीवन के द्वारा उनके परिवार को शान्ति मिली।

प्रार्थना करें: इस क्षेत्र में जिन लोगों ने परमेश्वर का वचन सुना, वे विश्वास में बढ़ने के लिये। बपतिस्मे के लिये तैयार लोगों के लिये। इस क्षेत्र में आयोजित खोजियों की सभा के माध्यम से लोग फलवंत होने के लिये। कार्यक्षेत्रों में हिन्दी बाइबल और संगीत वाद्ययंत्र की आवश्यकता के लिये, कृपया प्रार्थना करें।

राजस्थान – बांसवाड़ा प्रांत

परमेश्वर की स्तुति हो: गनोद तालुक में सुसमाचार के लिये द्वार खुला। बहन नान्या जो पिछले 4 महीनों से बीमार थी, उन्हें प्रभु यीशु के नाम में पूर्ण चंगाई मिली। भाई रमेश ने अपने पापों का पश्चाताप किया। 5 लोगों ने मसीह में अपने नए विश्वास को स्वीकार किया।

प्रार्थना करें: बांसवाड़ा विश्वासियों के कैंप में शामिल होने वाले लोग, स्वेच्छा से सेवकाई में भाग लेने के लिये। भाई कनेश जो किडनी की समस्या से ग्रसित हैं, उन्हें पूर्ण चंगाई मिलने के लिये। करीना को नशे से छुटकारा मिलने के लिये। लम्भाघाट और कुशालगढ़ के लोगों का उद्धार होने के लिये, कृपया प्रार्थना करें।

राजस्थान – उदयपुर प्रांत

परमेश्वर की स्तुति हो: बहन रूपली जो लकवे के रोग से ग्रसित थीं, प्रभु यीशु के नाम में उन्हें चंगाई मिली। वालू और उनके परिवार ने प्रभु यीशु को

अपने व्यक्तिगत उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार किया। गोगुंदा क्षेत्र में सेवकाई के लिये द्वार खुला। मेवाड़ी और वागड़ी जनसमूह के मध्य में आयोजित मेले के माध्यम से कई लोग परमेश्वर के वचन में दृढ़ हुये।

प्रार्थना करें: चंद्रा के परिवार को प्रभु बच्चे की आशीष देने के लिये। बपतिस्में के लिये तैयार लोगों के लिये। तोला और अरविंद को दुष्टात्मा के बंधन से छुटकारा मिलने के लिये। उंद्री गाँव में दिखे जाने वाले दुष्ट के कार्यों को प्रभु दूर करने के लिये, कृपया प्रार्थना करें।

उत्तर प्रदेश – लखनऊ प्रांत

परमेश्वर की स्तुति हो: भाई सोबरन लाल को प्रार्थना के माध्यम से दौरे पड़ने के रोग से चंगाई मिली। कई लोग विश्वासियों की संगति में शामिल हुये। एक आराधना समूह प्रारम्भ किया गया। प्रभु के अनुग्रह द्वारा बक्खारी क्षेत्र में आराधना भवन का निर्माण किया गया।

प्रार्थना करें: 2 परिवार आराधना समूह में शामिल हुये, वे विश्वास में दृढ़ होने के लिये। शकनकपुर क्षेत्र में प्रभु की आराधना प्रारम्भ होने के लिये। अपूर्वा के परिवार को बच्चे की आशीष मिलने के लिये। इस क्षेत्र में आयोजित खोजियों की सभा के माध्यम से लोग आशीषित होने के लिये।

उत्तर प्रदेश – भोजपुरी प्रांत

परमेश्वर की स्तुति हो: इस क्षेत्र में कईं परिवारों ने प्रभु के प्रेम को जाना। इस क्षेत्र में सेवकाई के लिये नए सम्पर्कों के लिये। बहन उर्मिला देवी को टी. बी के रोग से चंगाई मिली।

प्रार्थना करें: हीरामजीत और अरविंद कुमार का परिवार विश्वास में बढ़ने के लिये। मुशाही क्षेत्र में विभिन्न बीमारियों से ग्रसित लोगों के लिये। नेवाड़ा क्षेत्र के आराधना भवन का निर्माण कार्य पूर्ण होने के लिये। भाई दिनेश कुमार जो पित्त की समस्या से ग्रसित हैं, उन्हें पूर्ण चंगाई मिलने के लिये, कृपया प्रार्थना करें।

झारखण्ड

परमेश्वर की स्तुति हो: भाई सियोन लकड़ा जुए और नशे के आदी थे, सुसमाचार के द्वारा उन्हें छुटकारा मिला। भाई प्रीतम कुजुर जो पिछले 8 वर्षों

से दौरे पड़ने के रोग से ग्रसित थे, यीशु के नाम में उन्हें चंगाई मिली। 10 लोगों ने मसीह में अपने नए विश्वास को स्वीकार किया। हारूप क्षेत्र में आयोजित खोजियों की सभा के माध्यम से कई लोगों ने सुसमाचार सुना।

प्रार्थना करें: 5 गाँव में दिखे जाने वाला दुष्ट का कार्य दूर होने के लिये। सोमरा भगत जो अंधकार के कार्यों में लिप्त हैं, पवित्र आत्मा उनके हृदय में कार्य करने के लिये। बहन करिश्मा कुमारी जो मानसिक बीमारी से ग्रसित हैं, उन्हें चंगाई मिलने के लिये, कृपया प्रार्थना करें।

त्रिपुरा

परमेश्वर की स्तुति हो: 14 लोगों ने मसीह में अपने नए विश्वास को स्वीकार किया। विश्वासी अलोशिम सुसमाचार कार्य में रूचि ले रहे हैं। फरांग हताई आराधना समूह में 3 परिवार शामिल हो रहे हैं। सुबाराम देबबर्मा को दुष्टात्मा के बंधन से छुटकारा मिला।

प्रार्थना करें: बपतिस्मे के लिये तैयार लोगों के लिये। भाई स्वपन जमातिया जो हृदय की समस्या से ग्रसित हैं। क्वचम द्विहासिंग क्षेत्र की कलीसिया के सदस्य सुसमाचार कार्य में शामिल होने के लिये, कृपया प्रार्थना करें।

पश्चिम बंगाल – दार्जिलिंग जिला

परमेश्वर की स्तुति हो: सागर ऑरान ने सुसमाचार सुनने के बाद नशा ना करने का निर्णय लिया। भाई सुभाष दमल को टी.बी के रोग से चंगाई मिली। भाई सजीत इंदवर ने पहली बार प्रभु का वचन सुना और अपना हृदय प्रभु के लिये खोल दिया। बिशाल हसदा और फुलमनी मुंडा को नया जीवन मिला, जिसके परिणामस्वरूप उनके समस्त परिवार को शांति मिली।

प्रार्थना करें: थंझोरा क्षेत्र में आराधना भवन के निर्माण के लिये भूमि की आवश्यकता के लिये। घोषपुकुर आराधना भवन के विस्तार के लिये। दार्जिलिंग क्षेत्र में सेवकाई के लिये पूर्णकालीन सेवकों की आवश्यकता के लिये। पेटकी और बैरागी क्षेत्र के युवा सुसमाचार कार्य में सहयोग करने के लिये, कृपया प्रार्थना करें।

पश्चिम बंगाल – कोलकाता प्रांत

परमेश्वर की स्तुति हो: 14 लोगों ने मसीह में अपने नए विश्वास को

स्वीकार किया। सेवकाई के लिये प्रभु ने 2 सेवकों को दिया। भाई सनातन किस्कु को टी.बी के रोग से चंगाई मिली, वे अपनी गवाही दूसरों के साथ बाँट रहे हैं। तारागंज क्षेत्र के विश्वासी परमेश्वर का वचन सुनने में रूचि ले रहे हैं।

प्रार्थना करें: कार्यकर्ता शिबल टुडू, नारान बहाली और जैकब टुडू को प्रभु बच्चे की आशीष देने के लिये। सुरिशातुली क्षेत्र में आराधना भवन के निर्माण के लिये भूमि की आवश्यकता के लिये। सुमित्रा टुडू जो कैंसर के रोग से ग्रसित हैं, उन्हें पूर्ण चंगाई मिलने के लिये। मालदा और दक्षिण जिले में आयोजित क्षेत्र सर्वेक्षण के लिये, प्रभु का मार्गदर्शन होने के लिये, कृपया प्रार्थना करें।

सिक्किम

परमेश्वर की स्तुति हो: भाई सलिंगा शंकर जो नशे के आदी थे, उन्होंने नशा छोड़ दिया और प्रभु यीशु को स्वीकार किया। भाई वांगचुक जो प्रभु के प्रेम से दूर थे, उन्होंने पश्चाताप किया और अपने परिवार सहित प्रभु की आराधना कर रहे हैं। सूरज राय और मन बहादुर राय सुसमाचार सुनने में रूचि ले रहे हैं। गंगचुंग और रानी दारा क्षेत्र में सेवकाई के लिये द्वार खुला।

प्रार्थना करें: कार्यकर्ता बिक्की राय द्वारा संचालित सेवकाई फलवंत होने के लिये। ऊपरी रिंबिक क्षेत्र में आयोजित खोजियों की सभा में नयी आत्मायें शामिल होने के लिये। टेसेंगथांग और हत्थीडुंगा क्षेत्र के विश्वासियों की आत्मिक उन्नति के लिये, कृपया प्रार्थना करें।

असम

परमेश्वर की स्तुति हो: 3 परिवार प्रभु की सेवकाई में रूचि ले रहे हैं। सत्यापुर में वितरित किए गए सुसमाचार ट्रैक्टस के माध्यम से हमें 20 नए सम्पर्क प्राप्त हुये। मिसिंग जनसमूह के लोग सुसमाचार कार्य में रूचि ले रहे हैं। सिवनी डोले को लकवे के रोग से चंगाई मिली।

प्रार्थना करें: बपतिस्में के लिये तैयार लोगों के लिये। चंदनपुर क्षेत्र के लोगों के हृदय में प्रभु कार्य करने के लिये। प्रकाश बसुमतारी जो घर से चले गए, वे घर वापस आने के लिये। ब्रोथ चुक गाँव में वे परिवार जो शराब के आदी हैं,

उन्हें छुटकारा मिलने के लिये, कृपया प्रार्थना करें।

मणिपुर

परमेश्वर की स्तुति हो: विश्वासी लालनेखाई को कैंसर के रोग से चंगाई मिली। 59 क्षेत्रों में सुसमाचार कार्य प्रारम्भ किया गया। 105 क्षेत्रों में साप्ताहिक बाइबल अध्ययन समूह और छोटे समूह की सभाऐं आयोजित करने के लिये द्वार खुला। विश्वासी कैलाश और नरेन्द्र ने सुसमाचार कार्य के लिये अपने घर का द्वार खोला।

प्रार्थना करें: वाहेंग खुनौ क्षेत्र के लोगों के हृदय में प्रभु कार्य करने के लिये। भाई ललित सिंह जो चलने में असमर्थ हैं। बपतिस्में के लिये तैयार लोगों के लिये। हेइनोकबोक और हेइरोक क्षेत्र में सुसमाचार के लिये द्वार खुलने के लिये, कृपया प्रार्थना करें।

ओडिशा – गंजाम, गजपति जिला

परमेश्वर की स्तुति हो: 56 लोगों ने मसीह में अपने नए विश्वास को स्वीकार किया। खम्बारिसाही विश्वासियों की संगति में 31 लोग शामिल हुये। सिमिरी क्षेत्र में दिखे जाने वाला दुष्ट का कार्य प्रभु यीशु के नाम में दूर हुआ। प्रभु के अनुग्रह द्वारा एस पैलेम क्षेत्र के आराधना भवन का निर्माण कार्य पूर्ण हुआ।

प्रार्थना करें: तेंतिलिसाही क्षेत्र के भाई बड़ा रायता जिनके तीन बच्चे प्रभु में सो गये हैं, उनके परिवार की सांत्वना के लिये। भाई दारसुना और जादा रायता जो लकवाग्रस्त हैं, प्रभु उन्हें चंगाई देने के लिये। 18 लोग जो आराधना समूह में शामिल हुये हैं, वे विश्वास में दृढ़ होने के लिये, कृपया प्रार्थना करें।

ओडिशा – कंधमाल

परमेश्वर की स्तुति हो: सकूसबाली क्षेत्र में आयोजित सुसमाचार सभा के माध्यम से 320 लोग आशीषित हुये। इस क्षेत्र में आयोजित बच्चों के कैंप के माध्यम से कई बच्चे परमेश्वर का वचन सुनने में रूचि ले रहे हैं। क्षेत्र सर्वेक्षण के माध्यम से 50 गाँवों को सेवकाई के लिये चिन्हित किया गया।

प्रार्थना करें: 6 लोग जिन्होंने मसीह में अपने नए विश्वास को स्वीकार किया,

वे प्रभु में दृढ़ बने रहने के लिये। 35 लोग जिन्होंने पहली बार सुसमाचार सुना, वे परमेश्वर के प्रेम में बढ़ने के लिये। कुटिगुड़ा क्षेत्र विश्वासियों की आत्मिक उन्नति के लिये, कृपया प्रार्थना करें।

छत्तीसगढ़ – चाँपा प्रांत

परमेश्वर की स्तुति होः 30 लोगों ने प्रभु यीशु मसीह को अपने व्यक्तिगत उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार किया। महुवापाड़ा क्षेत्र में आराधना समूह प्रारम्भ किया गया। कार्यकर्ता कृष्ण कुमार और सरबल सारथी बच्चे की आशीष मिली। उन परिवारों के लिये प्रभु की स्तुति हो जिन्होंने सेवकाई के लिये 12 सेवकों को साइकिलें दान की।

प्रार्थना करेंः इस क्षेत्र में आयोजित खोजियों की सभा के माध्यम से कई लोगों ने परमेश्वर का वचन सुना, वे प्रभु में बढ़ने के लिये। नंदेली क्षेत्र में बाइबल अध्ययन समूह प्रारम्भ करने के लिये किए गए प्रयासों के लिये। भाई धरम लाल टंडन जो शराब के आदी हैं, उन्हें छुटकारा मिलने के लिये, कृपया प्रार्थना करें।

छत्तीसगढ़ – रायपुर प्रांत

परमेश्वर की स्तुति होः प्रभु ने हमें 27 आराधना समूहों में "मिशन संडे" मनाने में सक्षम बनाया। 10 स्थानों में एल.ई.जी केन्द्र प्रारम्भ किया गया। इस क्षेत्र में कई लोग जो परमेश्वर का वचन सीखने में रूचि ले रहे हैं। सरसीवा क्षत्र में आयोजित चिकित्सा कैंप के माध्यम से 70 लोग लाभान्वित हुये। विश्वासी रामकुमार और चंदानी की गवाही के माध्यम से उनके समस्त परिवार का उद्धार हुआ।

प्रार्थना करेंः भाई राहुल को नशे से छुटकारा मिलने के लिये। दमतारी क्षेत्र में आयोजित क्षेत्र सर्वेक्षण के लिये परमेश्वर का मार्गदर्शन होने के लिये। चंदकुरी क्षेत्र में आराधना भवन के निर्माण के लिये भूमि की आवश्यकता है, कृपया प्रार्थना करें।

मध्य प्रदेश

परमेश्वर की स्तुति होः बीना क्षेत्र में प्रारम्भ किए गए बाइबल अध्ययन समूह में नयी आत्माऐं शामिल हुईं। झाबुआ क्षेत्र में आयोजित युवा कैंप के

माध्यम से सेवकाई के उज्जवल अवसरों के लिये प्रभु की स्तुति हो। रेखा के परिवार को 5 वर्षों के बाद प्रार्थना के माध्यम से बच्चे की आशीष मिली। भाई आकाश को प्रभु ने उचित नौकरी की आशीष दी।

प्रार्थना करें: भाई मुकेश जो ब्लड कैंसर से ग्रसित हैं, उन्हें चंगाई मिलने के लिये। भाई मंगल के हृदय में प्रभु कार्य करने के लिये। मुजावर क्षेत्र में सेवकाई के लिये द्वार खुलने के लिये। सुसमाचार से वंचित क्षेत्रों में सेवकों को भेजा जाना है, कृपया प्रार्थना करें।

गुजरात – दांग जिला

परमेश्वर की स्तुति हो: 7 लोगों ने मसीह में अपने नए विश्वास को स्वीकार किया। 2 युवा पूर्णकालीन सेवकाई के लिये आगे आये। कमलेश भाई जो दुष्टात्मा के चुंगल में थे, उन्हें छुटकारा मिला। दक्शाबेन के परिवार को 5 वर्षों के बाद प्रार्थना के माध्यम से बच्चे की आशीष मिली।

प्रार्थना करें: बिपुपाड़ा और थोरपाड़ा क्षेत्र के विश्वासियों की आत्मिक उन्नति के लिये। विश्वासी चंदरभाई और जयसिंहभाई जिन्हें अपने विश्वास के कारण कई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। वर्ली जनसमूह के मध्य में सेवकाई के लिये पूर्णकालीन सेवकों की आवश्यकता है, कृपया प्रार्थना करें।

महाराष्ट्र

परमेश्वर की स्तुति हो: अर्चना वाघमारे के परिवार ने प्रभु की सेवकाई के लिये स्वयं को समर्पित किया। परमेश्वर के योजना अनुसार सथलवाड़ा क्षेत्र के आराधना भवन का निर्माण कार्य चल रहा है। बयानाबाई जो हृदय के दर्द से ग्रसित थीं, उन्हें चंगाई मिली। सखूबाई मेश्रामका परिवार इस क्षेत्र में सेवकाई के लिये सबसे आगे खड़े हैं।

प्रार्थना करें: गुलतारे और सैदानीपाड़ा क्षेत्र के विश्वासी आसपास के गाँव में सुसमाचार बाँटने के लिये। इस क्षेत्र में आयोजित खोजियों की सभा में नयी आत्मायें शामिल होने के लिये। बपतिस्मा सभाओं के लिये। गवांडगाँव और मुजालगा क्षेत्र के ग्रामीण जो परमेश्वर का वचन सुनने में रूचि ले रहे हैं, वे परमेश्वर के प्रेम में दृढ़ बने रहने के लिये, कृपया प्रार्थना करें।

सेवा के लिए सम्पर्क करें

JAMMU: Vishwa Vani, C/o Ashirwad Bhawan, H.NO. 165, Lane-2, Christian Colony, New Plot, Jammu-180005. Mobile No- 9469289692, 9419287712.

PUNJAB/HP: Vishwa Vani, C/o Dr. Sony Astha Dental lab, 2-A, Ward No-13, Dev Nagari, Near Hossana Church, Behind Dr. Rajpal Hospital Camini, Pathankot, Punjab- 145001, Mobile No- 9915651260.

UTTRAKHAND: Vishwa Vani, Vill. Gorakhpur Aarkediya Grant, Christian Colony Near Methodist Church Water Tank, P.o Badowala Prem Nagar, District Dehradun, Uttarakhand - 248007, Mobile: 9557968104.

DELHI: Vishwa Vani, F-11, First Floor, Vishwakarma Colony, M.B. Road, New Delhi - 110044, Ph: 0129- 4838657; Mobile No: 9910762447.

UTTAR PRADESH: Vishwa Vani, Raj Villa 11/32/1 Indira Nagar, Lucknow, Uttar Pradesh - 226016 Mobile No- 8687951286.

UTTAR PRADESH: Vishwa Vani, C/o Vivek Singh (Advocate), H.No-D-65/423, C-8, Rana Nagar Colony, Near Scion Public School, Lagaratara, Varanasi, Uttar Pradesh-221002, Mobile No: 8115123799

RAJASTHAN: Vishwa Vani, Mission Compound, Banswara, Rajasthan - 327001, Mobile No- 9414725164.

RAJASTHAN: Vishwa Vani, C/o Abhram Ninama, 29, Jaldarshan Complex, Sanjay Park, Rani Road, Udaipur, Rajasthan - 313001, Mobile No- 9602385024.

MADHYA PRADESH: Vishwa Vani, 2/6-A, Sarvajan Colony, Akbarpur Nayapura, Kolar Road,Bhopal, Madhya Pradesh - 462042, Mobile No - 9770252588.

MADHYA PRADESH: Vishwa Vani, C/o Mrs. Neena singh, 146 M.C.I. Colony, Near Anchal Vihar Katanga, Jabalpur, Madhya Pradesh - 482001, Mobile: 7722916665.

BIHAR: Vishwa Vani, CA/59, Near Malahi Pakri Chowk, PC Colony, Kankarbagh, Patna, Bihar-800020, Mobile No- 9110966419; 9337652667.

JHARKHAND: Vishwa Vani, C/o Kachhap Niwas, Bodra Lane Nayatoli. H.B.Road,Ranchi, Jharkhand - 834001. Mobile No-9431927472; 7909013933.

CHATTISGARH: Vishwa Vani, H.No. D- 4, Shatabadi Nagar, Telibandha, Post- Ravi Gram, Raipur 492006, Chhattisgarh, Mobile No. 9826452343, 7879125657.

CHATTISGARH: Vishwa Vani, Thomson Villa, H.NO-58, Ward No-17, Mission Road Bhojpur, Champa, Dist-Janjgir-Champa, Chhattisgarh - 495671, Mobile No:7987020083; 9926176754.

वर्त्तमान समाचार :

धूम्रपान सम्पूर्ण स्वास्थ्य और खुशहाली के लिए हानिकारक है, यह न केवल फेफड़ों बल्कि पूरे शरीर को भी प्रभावित करता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, तंबाकू से हर साल 8 मिलियन से अधिक लोगों की मौतें होती है, जिसमें अनुमानित 1.3 मिलियन गैर–धूम्रपान करने वाले लोग भी शामिल हैं, जो धूम्रपान करने वालों धूएं के सम्पर्क में आते हैं।

हे परमेश्वर, उन लोगों का उद्धार कर जो धूम्रपान और तंबाकू के आदी हैं।

वर्ष 2023 प्रवासियों के लिए रिकॉर्ड दर सबसे घातक वर्ष रहा है, जिसमें इंटरनेशनल ऑर्गनाइजेशन फॉर माइग्रेशन (आइ.ओ.एम) मिसिंग माइग्रेंट्स प्रोजेक्ट के अनुसार कम से कम 8565 मौतें दर्ज की गई हैं। यह दुखद आंकड़ा 2022 की तुलना में 20 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाता है, जो जीवन की और इस हानि को रोकने के लिए तत्काल क्रियान्वयन/कारवाई की आवश्यकता को रेखाकिंत/इशारा करता है।

यीशु, उन लोगों की मदद कर जो नौकरी, शिक्षा, परिवार की भलाई आदि के लिए दूसरे स्थानों पर पलायन करते हैं।

सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार, भारत में 2022 में 4,61,312 सड़क दुर्घटनाएं हुई, जिनमें से 1,68,491 लोगों की मौते हुई और 4,43,366 लोग घायल हुए। ये आंकड़ें 2021 की तुलना में दुर्घटनाओं, मौंतो और घायलों की संख्या में क्रमशः 11.9 प्रतिशत, 9.4 प्रतिशत और 5.3 प्रतिशत की प्रति वर्ष वृद्धि को दर्शाते हैं।

सुरक्षा करने वाले परमेश्वर, आप वाहन चालकों और यात्रियों के लिए ढाल बनें।

एक महत्वपूर्ण विकास में, छत्तीसगढ़ में साउथ ईस्टर्न कोल–फिल्डस् लिमिटेड (एस.इ.सी.एल) की गेवरा खदान एशिया की सबसे बड़ी कोयला खदान बनने के लिए तैयार है। खदान को हाल ही में अपनी उत्पादन क्षमता मौजूदा 52.5 मिलियन टन प्रति वर्ष से बढ़ाकर प्रभावशाली 70 मिलियन टन करने के लिए पर्यावरणीय मंजूरी प्राप्त हुई है।

गेवरा कोयला खदान को पिछले साल देश की सबसे बड़ी कोयला खदान का दर्जा मिला। यह 40 वर्षों से अधिक समय से देश की ऊर्जा सुरक्षा में अपना योगदान दे रहा है।

हे परमेश्वर, हम अपने देश में उपलब्ध खनिजों की समृद्धि के लिए आपकी प्रंशसा करते हैं। हम खनिकों की सुरक्षा के लिए प्रार्थना करते हैं।

समय परमेश्वर के हाथों में है...

छह महीने से पहले हमारे परिवार का यीशु से कोई संबंध नहीं था। हमें सुसमाचार सेवक के माध्यम से यीशु के प्रेम के विषय में पता चला जो वाणीवाला क्षेत्र में परमेश्वर का वचन प्रचार कर रहा था। उस दिन यीशु हमारे घर का स्वामी बन गया। पिछले 6 महीनों के दौरान हमने अपने जीवन में बड़े तूफानों का सामना किया। लेकिन यीशु जो हमारी अगुवाई कर रहा है वह एक अद्भूत कार्य करने वाला परमेश्वर है। मेरे पति को अचानक, 5 फरवरी 2024 को हृदय का दौरा पड़ा। वह चार दिनों तक आई.सी.यू में भर्ती रहे। मेडिकल रिर्पोट उत्साहवर्धक नहीं था। हम उन्हें वापस घर ले आयें। हमने उन्हें प्रभु को सौंप दिया और सुसमाचार सेवक और विश्वासियों के साथ, हमने आशा के साथ परमेश्वर की ओर निहारा। मनुष्य के जीवन के दिन मेडिकल रिर्पोट पर निर्भर नहीं करते। यह पूरी तरह से परमेश्वर के हाथों पर आश्रित हैं और मेरे पति इसके एक जीवित गवाह हैं। हाल्लेल्लूय्याह! *– राधा जसवीर सिंह, उत्तराखंड*

सामर्थ परमेश्वर की है

मठ मंडी में बाइबल अध्ययन समूह ने मुझे इस पद को जीवंत रूप में अनुभव करने में सक्षम बनाया "वह अपने वचन के द्वारा उनको चंगा करता है, और जिस गड़हे में वे पड़े हैं उससे निकालता है" (भजन संहिता 107:20)। मेरे सिर में वर्षों से भयंकर दर्द रहता था। मैं पूरी तरह से दर्द निवारक दवाओं का आदी हो गया था लेकिन उनसे मुझे पूर्ण चंगाई प्राप्त नहीं होती थी। मैं दर्द के कारण अपना सिर भी नहीं उठा पा रहा था और मेरी ताकत खत्म हो गई थी! इस समय, मुझे परमेश्वर के वचन से ढाढ़स मिला! यीशु मसीह के कोड़े खाने से मुझे पूर्ण छुटकारा मिला! हम अब परमेश्वर के वचन को सीखने और मनन करने के लिए अपने गाँव में एक समूह के रूप में एकत्रित हो रहे हैं और हम वचन में बढ़ रहे हैं। हमें निरंतर स्वर्ग से मन्ना मिलता है जिसके परिणाम स्वरूप आंतरिक रूप से हमारा पोषण होता है। प्रभु की स्तुति हो! *– सलमा, पंजाब।*

यीशु हमारी आशा

पिछले 10 वर्षों तक मैं लज्जाजनक जीवन व्यतीत करता रहा! किन्तु मुझे यीशु के चरणों में विश्राम मिला। हमारे यहाँ जो बच्चे उत्पन्न होते थे, वे जीवित नहीं रह पाते थे। यह हमारी आँखों के सामने जन्म के दो या तीन दिन बाद मर जाते थे। हमने अपने बच्चों के जीवन की सुरक्षा के लिए कई प्रयास किए। लेकिन सब कुछ निष्फल रहा। हमारे गाँव दामोदरपुर में आये सुसमाचार सेवक से हमें सांत्वना मिली। पिछले 6 महीनों में हमारे पास सबसे बड़ी शांति और सांत्वना यह है कि "यीशु मसीह हमें जीवन देता है और वह निश्चित रूप से हमारे द्वारा पैदा होने वाले बच्चों को भी जीवन देगा। उस ने हमें और हमारी पीढ़ी को महान प्रकाश दिया है! "कृप्या हमारे लिए निरंतर प्रार्थना करें।

– विश्वासी चाँदनी।

RNI REGD. NO. RN. 45019/89 | POSTAL REGD. NO. HQ/SD/180/2024-2026 - HINDI | DATE OF PUBLICATION 22.03.2024
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT - PMG/TS/HQR/SC-02/WPP/2024-2026
Return Requested: VISHWAVANI SAMARPAN
1-10-28/247, Anandapuram,
ECIL Post, Hyderabad-500062.

प्रार्थना

सर्वशक्तिमान पिता,
आपको हम पिता के रूप में पुकारते हैं तो हमारी सहायता करें कि हमारी आवाज ऊँची न हो।
विश्वासी के रूप में हम कहते हैं कि परमेश्वर हमारे साथ है, तो हमें मनुष्यों के क्रोध से भयभीत न होने में सहायता करें जैसे कि हम जानते हैं कि परमेश्वर हमारी आवश्यकताओं को अपनी महिमा के लिए बहुतायत रूप में पूरा करेगा। आप हमारी सहायता करें कि हम अपनी आवश्यकता के लिए किसी मनुष्यों के आगे हाथ न फैलायें। हम जानते हैं कि प्रभु का हाथ छोटा नहीं है कि सेवा के लिए आवश्यकताओं को न दे। जैसे हम मसीह के ज्ञान में बढ़ते हैं,
वैसे ही हमें मसीह के प्रचार में बढ़ने में हमारी सहायता करें
जैसा कि हम विश्वास करते हैं कि पवित्रता के ज्ञान में
बढ़ना ही बुद्धिमत्ता है।
हमारी सहायता करें कि हम प्रतिदिन संसारिक बातों को त्याग सकें
आंतरिक रूप से बलवान हो सके,
और आत्माओं के फल में बढ़ोतरी हो सके।
प्रभु आपका अनुग्रह उन सब पर हो जो इसे पढ़ते हैं वे प्रार्थना के द्वारा अड़चनों पर विजय प्राप्त करें।
प्रेम के द्वारा मनुष्यों पर विजय प्राप्त करें,
विश्वास के द्वारा समस्याओं पर विजय पाएँ, और लगातार विजयी हों
प्रभु यीशु मसीह के विजयपूर्ण नाम में यह प्रार्थना मांगते हैं, आमीन्!

LINGAGUDA, ODISHA - 03.03.2024

PATADI, CHHATTISGARH - 10.03.2024

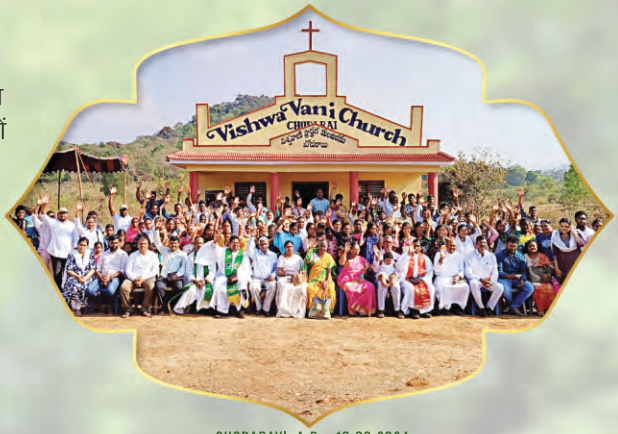

CHODARAYI, A.P. - 10.03.2024

VISHWA VANI SAMARPAN – HINDI LANGUAGE
Printed and Published by P. Selvaraj on behalf of VISHWA VANI, a registered society (Regn. No.17871 of 1987) and printed at CAXTON Offset Pvt. Ltd., 11-5-416/3, Red Hills, HYD-04. and published at 1-10-28/247, Anandapuram, ECIL Post, HYD-62. **POSTING DATE: 25.03.2024**. EDITOR: P. SELVARAJ